प्रेरणा
RNI No. UPHIN/2000/3766 ISSN No. 2581-3528 ₹ : 20

केशव संवाद

फाल्गुन-चैत्र, विक्रम सम्वत् 2079-80 (मार्च-2023)

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

दूरभाष: 0120–4545608

ई–मेल: ssm.noida@gmail.com

वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

* भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
* नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
* आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
* प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
* सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
* विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

दिनेश गोयल	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/3766

ISSN No. 2581-3528

मार्च, 2023

वर्ष : 23 अंक : 03

अणंज कुमार त्यागी

अध्यक्ष

प्रे. शो. सं. न्यास

संपादक

कृपाशंकर

सह संपादक

डॉ. प्रदीप कुमार

संपादक मंडल

डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. अखिलेश मिश्र, डॉ. नीलम कुमारी, प्रो. अनिल निगम, डॉ. मनमोहन सिंह, अनीता चौधरी, अनुपमा अग्रवाल, अमित शर्मा

पृष्ठ संयोजन

वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय

प्रेरणा शोध संस्थान न्यास

सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201301

फोन न. 0120 4565851, 2400335

ईमेल : keshavsamvad@gmail.com

वेबसाइट : www.premasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक सुखवीर प्रकाश द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105, आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

संपादकीय	–	04
अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा (प्रस्ताव)	–	05
मा. सरकार्यवाह जी के वक्तव्य	–	06
भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में... (कवर स्टोरी)	– प्रहलाद सबनानी	08
वैश्विक नेताओं की सूची में नरेंद्र मोदी शीर्ष पर	– प्रमोद भार्गव	10
अधम समाज की सोच	– नरेन्द्र भदौरिया	12
अप्सु अंतः अमृतम्	– प्रभाकर वर्मा	14
नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए ठोस...	– पंकज जयस्वाल	16
भारत में क्यों काम नहीं कर रहा जॉर्ज सोरोस ...	– बिभाकर झा	18
बदनाम करने की विदेशी साजिश	– ललितशंकर	20
हीरे मोती उगले मेरे देश की भूमि	– आशीष कुमार	21
हारिए मगर जीतने के लिए!	–डॉ.ऋतु दुबे तिवारी	22
बेटियों पर बढ़ता भरोसा, पितृसत्तात्मक सोच में ...	– सोनम लववंशी	25
समाचार सुर्खियां	– प्रतीक खरे	26

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

ऐसे समय में जब भारत ने जी-20 देशों के समिट की अध्यक्षता की है, देश के अनेक शहरों में आयोजित हो रहे विविध कार्यक्रमों में विदेशी मेहमान भारत का सपंदन अनुभव कर रहे हैं। विभिन्न आर्थिक और सामरिक मुद्दों पर चर्चा हुई है। इस समय जो सबसे विहंगम दृश्य विदेश मंत्रियों के सम्मेलन में देखने को मिला वह था दिल्ली में, अमेरिका और रूस के प्रतिनिधियों की इस मंच पर एक साथ उपस्थिति। रूस-यूक्रेन युद्ध के दृष्टिगत पूरी दुनियाँ जिस तरह विचलित नजर आ रही है, शांति और समझौते के सभी प्रयास विफल हो रहे हैं, उसका कारण यही है कि दो बड़ी सामरिक शक्तियां आपस में चर्चा करने के लिए प्रस्तुत ही नहीं हैं। ऐसे में यदि जी-20 देशों की समिट में एक समय की महाशक्ति रहे दो देशों ने आपस में वार्तालाप का आरम्भ किया वह स्वागत योग्य है, जिसका श्रेय भारतीय प्रयासों को जाता है। यह भारत के साथ प्रगाढ़ संबंध ही हैं कि दोनों देशों के विदेश मंत्रियों ने एक मंच साझा किया और वैश्विक कल्याण की दृष्टि इस G 20 सम्मलेन का मूल भाव बनी, जिसकी थीम वसुधैव कुटुम्बकम् रही। भारत ने बार-बार यह दोहरा कर कि "यह युग युद्ध का नहीं है" विश्व को यह सन्देश दिया है कि अब विश्व को युद्धों से आगे के भविष्य का चिंतन करना चाहिए। इस वातावरण में रूस के साथ अपने अन्य संबंधों को लेकर भी भारत ने एक सन्देश दिया। केवल यही नहीं चीन और भारत भी जिस तरह इस सम्मेलन में आपस में जमी बर्फ को पिघलाने का प्रयास करते दिखाई पड़ रहे हैं, वह उत्साहवर्धक है। यह समिट भारत की छवि को वैश्विक स्तर पर पराकाष्ठा प्रदान करेगा, इसमें कोई संदेह नहीं होना चाहिए।

ऐसे समय में जबकि सारी दुनियाँ की दृष्टि तेजी से विश्व की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनते भारत पर है, हमें अपनी आंतरिक सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी सतर्क दृष्टि बनाए रखनी होंगी। बुरी तरह से कर्ज में डूबता पाकिस्तान अपनी मौत स्वयं मर रहा है, इसके बाद भी वह भारत को आघात करने का कोई अवसर चूकना नहीं चाहता। पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार खालिस्तान के नाम पर हो रही अराजकता को रोकने में असफल दिखाई पड़ती है, मुख्यमंत्री भगवंत मान का यह कह भर देना कि इस सब में पाकिस्तान का हाथ है पर्याप्त नहीं है। पड़ोसी देश की शह पर ही पंजाब में एक बार फिर खालिस्तानी आतंकवाद पैर पसार रहा है, इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए। इन दिनों 'वारिस पंजाब दे' नाम का एक संगठन चर्चा में आया है जिसकी कमान एक युवक अमृतपाल सिंह के पास है, जिसे उसकी हरकतों के लिए 'भिंडरावाले 2.0' कहा जा रहा है। अमृतपाल सिंह ने अमृतसर के अजनाला थाने में जिस तरह की अराजकता फैलाई इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। जिस तरह अमृतपाल ने अपने समर्थकों की गिरफ्तारी पर तलवारें लिए हजारों लोगों के साथ थाने में घुसकर सरकार को उनकी रिहाई के लिए मजबूर कर दिया, यह राज्य में रबरबैंड सरकार की ओर इशारा है, यहाँ केंद्र से अपेक्षा है कि इस पर उनका कठोर रुख होना चाहिए, इसका इशारा माननीय गृह मंत्री अमित शाह जी के बयानों से मिल भी जाता है।

भारत विश्व शक्ति बन कर उभरा है इसमें कोई संदेह नहीं तथापि वैश्वविक ताकतें हमें किस तरह अस्थिर करना चाहती हैं इसे जार्ज सोरॉस प्रकरण से समझना चाहिए। इस उद्योगपति के इरादे बहुत पहले से ही स्पष्ट थे परंतु देश भर के समक्ष पोल पट्टी अभी खुली है। ऐसा ही बीबीसी प्रकरण भी है जो भारत में चुनाव को आस पास देख कर जानबूझ कर विवादित डॉक्यूमेंटरी जारी करता है, सोचिए कि भारतीय लोकतंत्र पर इस सीधे हमले के प्रयास को भी कुछ लोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जोड़ा कर देखते हैं, ऐसी अर्बन नक्सल मनोवृत्ति पर भी आघात करना होगा। राष्ट्र के प्रति चिन्तनशील सभी नागरिकों का यह राष्ट्रीय दायित्व बनता है कि जागरूक एवं सतर्क रहकर निष्ठापूर्वक राष्ट्र को परम वैभवशाली बनाने हेतु किये जा रहे यज्ञ में न केवल आहुति देते रहें अपितु यज्ञ में बाधक तत्वों को पहचान कर उनके साथ भी यथायोग्य उपचार किये जाने हेतु दृढ़ संकल्पित रहें।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा

प्रस्ताव

'स्व' आधारित राष्ट्र के नवोत्थान का संकल्प लें

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित अभिमत है कि विश्व कल्याण के उदात्त लक्ष्य को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु भारत के 'स्व' की सुदीर्घ यात्रा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रही है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का यह सुविचारित अभिमत है कि विश्व कल्याण के उदात्त लक्ष्य को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु भारत के 'स्व' की सुदीर्घ यात्रा हम सभी के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रही है। विदेशी आक्रमणों तथा संघर्ष के काल में भारतीय जनजीवन अस्त–व्यस्त हुआ तथा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व धार्मिक व्यवस्थाओं को गहरी चोट पहुँची। इस कालखंड में पूज्य संतों व महापुरुषों के नेतृत्व में संपूर्ण समाज ने सतत् संघर्षरत रहते हुए अपने 'स्व' को बचाए रखा। इस संग्राम की प्रेरणा स्वधर्म, स्वदेशी और स्वराज की 'स्व' त्रयी में निहित थी, जिसमें समस्त समाज की सहभागिता रही। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर सम्पूर्ण राष्ट्र ने इस संघर्ष में योगदान देने वाले जननायकों, स्वतंत्रता सेनानियों तथा मनीषियों का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण किया है।

स्वाधीनता प्राप्ति के उपरांत हमने अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनकर उभर रही है। भारत के सनातन मूल्यों के आधार पर होने वाले नवोत्थान को विश्व स्वीकार कर रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा के आधार पर विश्व शांति, विश्व बंधुत्व और मानव कल्याण के लिए भारत अपनी भूमिका निभाने के लिए अग्रसर है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा का मत है कि सुसंगठित, विजयशाली व समृद्ध राष्ट्र बनाने की प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति,

सर्वांगीण विकास के अवसर, तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग एवं पर्यावरणपूरक विकास सहित आधुनिकीकरण की भारतीय संकल्पना के आधार पर नए प्रतिमान खड़े करने जैसी चुनौतियों से पार पाना होगा। राष्ट्र के नवोत्थान के लिए हमें परिवार संस्था का दृढ़ीकरण, बंधुता पर आधारित समरस समाज का निर्माण तथा स्वदेशी भाव के साथ उद्यमिता का विकास आदि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। इस दृष्टि से समाज के सभी घटकों, विशेषकर युवा वर्ग को समन्वित प्रयास करने की आवश्यकता रहेगी। संघर्षकाल में विदेशी शासन से मुक्ति हेतु जिस प्रकार त्याग और बलिदान की आवश्यकता थी उसी प्रकार वर्तमान समय में उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए नागरिक कर्तव्य के प्रति प्रतिबद्ध तथा औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त समाजजीवन भी खड़ा करना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा स्वाधीनता दिवस पर दिये गए 'पंच–प्रण' का आह्वान भी महत्वपूर्ण है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा इस बात को रेखांकित करना चाहती है कि जहाँ अनेक देश भारत की ओर सम्मान और सद्भाव रखते हैं, वहीं भारत के 'स्व' आधारित इस पुनरुत्थान को विश्व की कुछ शक्तियाँ स्वीकार नहीं कर पा रही हैं। हिंदुत्व के विचार का विरोध करने वाली देश के भीतर और बाहर की अनेक शक्तियाँ निहित स्वार्थों और भेदों को उभार कर समाज में परस्पर अविश्वास, तंत्र के प्रति अनास्था और अराजकता पैदा करने हेतु नए–नए षड्यंत्र रच रही हैं। हमें इन सबके प्रति जागरूक रहते हुए उनके मंतव्यों को भी विफल करना होगा।

यह अमृतकाल हमें भारत को वैश्विक नेतृत्व प्राप्त कराने के लिए सामूहिक उद्यम करने का अवसर प्रदान कर रहा है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा प्रबुद्ध वर्ग सहित सम्पूर्ण समाज का आह्वान करती है कि भारतीय चिंतन के प्रकाश में सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, लोकतांत्रिक, न्यायिक संस्थाओं सहित समाजजीवन के सभी क्षेत्रों में कालसुसंगत रचनाएँ विकसित करने के इस कार्य में संपूर्ण शक्ति से सहभागी बने, जिससे भारत विश्वमंच पर एक समर्थ, वैभवशाली और विश्वकल्याणकारी राष्ट्र के रूप में समुचित स्थान प्राप्त कर सके।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा

सेवा साधना एवं ग्राम विकास केंद्र, पट्टीकल्याणा – पानीपत (हरियाणा)

चैत्र कृष्ण 5–7 युगाब्द 5179 (12–14 मार्च 2023)

ISSN No. 2581-3528

छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्यारोहण के 350वें वर्ष के उपलक्ष्य में मा. सरकार्यवाह जी का वक्तव्य

छत्रपति शिवाजी महाराज भारत के उन महान व्यक्तित्वों में एक हैं, जिन्होंने समाज को सैकड़ों वर्षों की दासता की मानसिकता से मुक्त कर समाज में आत्मविश्वास व आत्मगौरव का भाव जगाया। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को उनका राज्याभिषेक हुआ तथा हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना हुई। इस वर्ष हिन्दवी स्वराज्य स्थापना का 350वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। महाराष्ट्र सहित देशभर में इस निमित्त अनेकानेक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। रा. स्व. संघ इस पावन अवसर पर छत्रपति शिवाजी महाराज का पुण्यस्मरण करते हुए स्वयंसेवक तथा सभी समाज घटकों का आहवान करता है कि ऐसे सभी आयोजनों में भाग लेकर हिन्दवी स्वराज की स्थापना जैसी युगप्रवर्तक घटना का पुनःस्मरण करें।

छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन अद्वितीय पराक्रम, रणनीतिक कुशलता, युद्धशास्त्र की मर्मज्ञता, संवेदनशील, न्यायपूर्ण व पक्षपातरहित प्रशासन, नारी का सम्मान प्रखर हिंदुत्व जैसी कई विशेषताओं से परिपूर्ण रहा। विपरीत परिस्थिति का सामना करते समय भी अपने ध्येय तथा ईश्वर पर श्रद्धा व विश्वास, माता पिता एवं गुरु जनों का सम्मान, अपने साथियों के सुख–दुःख में साथ निभाने, समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने के कई उदाहरण उनके जीवन में पाए जाते हैं। बाल्यकाल से ही अपने व्यक्तित्व से उन्होंने अपने साथियों में स्वराज्य स्थापना हेतु प्राण न्योछावर करने की प्रेरणा जगाई, जो आगे चलकर भारत के अन्यान्य प्रदेशों के देशभक्तों के लिए भी प्रेरणादायक रही। उनके शरीर के शांत होने के पश्चात् भी सामान्य समाज ने दशकों तक एक सर्वंकष आक्रमण का यशस्वी प्रतिकार किया, जो इतिहास में अनोखा उदहारण है।

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा बाल्यकाल में लिये गए स्वराज्य स्थापना के संकल्प का उद्देश्य मात्र सत्ता प्राप्ति नहीं अपितु, धर्म एवं संस्कृति के रक्षा हेतु 'स्व' आधारित राज्य की स्थापना करना था। अतः उन्होंने उसका अधिष्ठान 'यह राज्य स्थापना श्री की इच्छा है' इस भाव से जोड़ा था। स्वराज्य स्थापना के समय अष्टप्रधान मंडल की रचना, 'राज्यव्यवहार कोष' का निर्माण और स्वभाषा का उपयोग, कालगणना हेतु शिव–शक का प्रारम्भ, संस्कृत राजमुद्रा का उपयोग, आदि कार्यकलाप 'धर्मस्थापना' के उद्देश्य से स्थापित 'स्वराज्य' को स्थायित्व देने की दिशा में ही रहे।

आज भारत अपनी समाजशक्ति को जागृत करते हुए अपने 'स्व' के आधार पर राष्ट्र निर्माण के पथ पर आगे बढ़ रहा है, भारत के 'स्व' आधारित राज्य की स्थापना के उद्देश्य से चली छत्रपति शिवजी महाराज की जीवनयात्रा का स्मरण अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणास्पद है।

ISSN No. 2581-3528

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200 वीं जन्म जयंती के अवसर पर मा. सरकार्यवाह जी का वक्तव्य

पराधीनता के काल में जब देश अपने सांस्कृतिक व आध्यात्मिक आधार के सम्बन्ध में दिग्भ्रमित हो रहा था, तब महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्राकट्य हुआ। उस काल में उन्होंने राष्ट्र के आध्यात्मिक अधिष्ठान को सुदृढ़ करने हेतु "वेदों की ओर लौटने" का उद्घोष कर समाज को अपनी जड़ों के साथ पुनः जोड़ने का अद्भुत कार्य किया। समाज को बल व चेतना प्रदान करने तथा समय के प्रवाह में आई कुरीतियों को दूर करनेवाले महापुरुषों की श्रृंखला में महर्षि दयानंद सरस्वती दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती के प्रादुर्भाव व उनकी प्रेरणाओं से हुई सांस्कृतिक क्रांति का स्पंदन आज भी अनुभव किया जा रहा है।

सत्यार्थप्रकाश में स्वराज को परिभाषित करते हुए उन्होंने लिखा कि स्वदेशी, स्वभाषा, स्वबोध के बिना स्वराज नहीं हो सकता। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महर्षि दयानंद की प्रेरणा और आर्यसमाज की सहभागिता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अनेक स्वनामधन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने इनसे प्रेरणा ली। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के संकल्प के साथ प्रारंभ किये गए आर्यसमाज के माध्यम से भारत को सही अर्थों में आर्य व्रत (श्रेष्ठ भारत) बनाना उनका प्रथम लक्ष्य था।

उन्होंने नारी को अग्रणी स्थान दिलाने के लिए युगानुकूल व्यवस्थाएँ बनाकर कन्या पाठशाला और कन्या गुरुकुल के माध्यम से उनको न केवल वेदों का अध्ययन करवाया अपितु नारी शिक्षा का प्रसार भी किया। आदर्श जीवनशैली अपनाने के लिए उन्होंने आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) पर न केवल आग्रह किया, अपितु उनके लिए व्यवस्था भी निर्माण की। उन्होंने देश की युवा पीढ़ी में तेजस्विता, चरित्र निर्माण, व्यसनमुक्ति, राष्ट्रभक्ति के संचार, समाज व देश के प्रति समर्पण निर्माण करने के लिए गुरुकुल व डीएवी विद्यालयों का प्रसार कर एक क्रांति की थी। गौ रक्षा, गोपालन, गौ आधारित कृषि, गौ संवर्धन के प्रति उनका आग्रह आज भी आर्यसमाज के कार्यों में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ कर धर्मप्रसार का एक नया आयाम खोला, जो आज भी अनुकरणीय है। महर्षि दयानंद का जीवन उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का साकार स्वरूप था। सादगी, परिश्रम, त्याग, समर्पण, निर्भयता एवं सिद्धांतों के प्रति अडिगता उनके जीवन के प्रत्येक क्षण में परिलक्षित होती है।

महर्षि दयानंद के उपदेशों और कार्यों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उनकी द्विशताब्दी के पावन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदन करता है। सभी स्वयंसेवक इस पावन अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में पूर्णमनोयोग से भाग लेकर उनके आदर्शों को अपने जीवन में चरितार्थ करें। रा. स्व. संघ की मान्यता है कि अस्पृश्यता, व्यसन और अंधविश्वासों से मुक्त करके एवं 'स्व' से ओत–प्रोत संस्कारयुक्त ओजस्वी समाज का निर्माण करके ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है।

महावीर स्वामी के निर्वाण के 2550 वर्ष पूर्ण होने पर मा. सरकार्यवाह जी का वक्तव्य

भगवान महावीर की निर्वाण प्राप्ति के 2550 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। उन्होंने कार्तिक अमावस्या के दिन अष्टकर्मों का नाश करके निर्वाण प्राप्त किया था। जनमानस को ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जानी वाली इस दिव्य विभूति ने आत्मकल्याण तथा समाज कल्याण में अपने जीवन को समर्पित कर मानवता पर परम उपकार किया। मानवता के कल्याण को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य के रूप में पाँच सूत्र दिए थे, जिनकी सार्वकालिक प्रासंगिकता है। भगवान महावीर ने नारीशक्ति को सम्मानजनक स्थान प्रदान करते हुए उन्हें खोया हुआ गौरव लौटा कर समाज में लैंगिक भेदभाव मिटाने का युगांतरकारी कार्य किया।

अपरिग्रह के संदेश से उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को सीमित करते हुए संयम पूर्ण जीवन जीने तथा अपनी अतिरिक्त आय को समाज के हित में समर्पित करने की समाज को दिशा दी। हमारी वर्तमान जीवन शैली से पर्यावरण को हो रही हानि से उसे बचाने में अपरिग्रह का सूत्र बहुत महत्वपूर्ण है। अहिंसा, सह–अस्तित्व और प्राणिमात्र में समान आत्मतत्व के दर्शन करने की उनकी शिक्षा का अनुपालन विश्व के अस्तित्व के लिए परम आवश्यक है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित कर्म सिद्धांत में अपने कष्टों और दुःखों के लिए दूसरों को उत्तरदायी ठहराने से बचने तथा अपने कर्म को ही कर्ता के सुख–दुःख का कारण मानने का सन्देश निहित है।

"स्यादवाद" भगवान महावीर का एक प्रमुख सन्देश है। अनेक प्रकार के द्वन्द्वों से पीड़ित मानवता को बचाने तथा शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए स्यादवाद आधार बन सकता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मत है कि वर्तमान को वर्द्धमान की बहुत आवश्यकता है। भगवान महावीर की निर्वाण प्राप्ति के 2550 वें वर्ष के अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करता है। सभी स्वयंसेवक इस निम्मित्त आयोजनों में पूर्ण मनोयोग से योगदान करेंगे तथा उनके उपदेशों को जीवन में चरित्रार्थ करेंगे। समाज से यह अपेक्षा है कि भगवान महावीर की शिक्षा को अंगीकार करते हुए विश्व मानवता के कल्याण में स्वयं को समर्पित करे।

ISSN No. 2581-3528

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होगी

कवर स्टोरी

प्रहलाद सबनानी

पूरे विश्व में सभी देशों का सकल घरेलू उत्पाद कुल मिलाकर लगभग 100 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है। इसमें भारत का हिस्सा मात्र 3.50 प्रतिशत है अर्थात् भारत का सकल घरेलू उत्पाद लगभग 3.50 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर है। जबकि, पूरे विश्व के 17.5 प्रतिशत से अधिक लोग भारत में निवास करते हैं। जनसंख्या की दृष्टि से तुलना की जाय तो भारत का सकल घरेलू उत्पाद बहुत कम है, जिसे केंद्र सरकार एवं कई राज्य सरकारें मिलकर अब इसे बहुत आगे ले जाने के कार्य में पूरे मनोयोग से कार्य करती दिखाई दे रही हैं। हालांकि, पूरे विश्व में सकल घरेलू उत्पाद के मामले में भारत पांचवे स्थान पर आ गया है एवं अब भारत से आगे केवल अमेरिका, चीन, जापान एवं जर्मनी जैसे देश हैं। परंतु, अधिक जनसंख्या होने के कारण भारत में प्रति व्यक्ति आय अन्य कई देशों की तुलना में बहुत कम है। प्रत्येक भारतीय की औसत आय 2,200 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष है जबकि अमेरिका में प्रति व्यक्ति औसत आय 70,000 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष है और चीन की जनसंख्या भारत से भी अधिक होने के बावजूद प्रत्येक चीनी नागरिक की औसत आय 12,000 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष है। इस प्रकार प्रत्येक भारतीय की औसत आय बढ़ाने के प्रयास किए जाना अब बहुत जरूरी है, जिसमें भारत की युवा शक्ति को अपना योगदान देना अब आवश्यक हो गया है।

आज किसी भी देश के लिए जनसंख्या का अधिक होना और उसमें भी युवा जनसंख्या की भागीदारी ज्यादा होना, उस देश विशेष के लिए बहुत लाभकारी स्थिति बन जाती है। वह भी तब, जब विशेष रूप से कई विकसित देशों यथा, जापान, जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, चीन, कनाडा आदि में जन्म दर बहुत कम हो चुकी हो एवं इन देशों में प्रौढ़ नागरिकों की जनसंख्या तेजी से बढ़ती जा रही हो एवं युवा जनसंख्या का अभाव महसूस किया जा रहा हो। इस प्रकार भारत युवा जनसंख्या की दृष्टि से बहुत ही लाभप्रद स्थिति में आ गया है। भारत की कुल 140 करोड़ जनसंख्या में से 50 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 25 वर्ष से कम है और 65 प्रतिशत जनसंख्या की आयु 35 वर्ष से कम है। सबसे अधिक युवा, अर्थात्

भारत में श्रम बहुत सस्ता है, अतः सस्ते एवं कुशल श्रम को अपनी ताकत बनाकर भारत विनिर्माण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ताकत बनने का प्रयास कर रहा है। साथ ही, भारतीय कुशल श्रम को विभिन्न देशों को भी उपलब्ध कराये जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत में भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करते हुए छोटे-छोटे बच्चों में बचपन में ही सेवा भावना का विकास किया जाता है एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव जगाया जाता है।

18–35 वर्ष के आयु वर्ग में 60 करोड़ भारतीय नागरिक आते हैं। प्रत्येक भारतीय की औसत आयु मात्र 29 वर्ष है जबकि चीन के नागरिकों की औसत आयु 37 वर्ष एवं जापान के नागरिकों की औसत आयु 48 वर्ष है। इसीलिए भारत को एक युवा देश कहा जा रहा है और पूरे विश्व की निगाहें आज भारत पर टिकी हुई हैं। अब तो यह स्थिति दिखाई देने लगी है कि यदि भारत आर्थिक प्रगति करेगा तो पूरा विश्व ही आर्थिक प्रगति करता हुआ दिखाई देगा, क्योंकि आगे आने वाले समय में भारत में विभिन्न उत्पादों का उपभोग तेजी से बढ़ता हुआ नजर आएगा।

आज भारत में साक्षरता दर 80 प्रतिशत के आसपास पहुंच गई है, जो कि एक बहुत अच्छी दर कही जा सकती है। हालांकि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं में शिक्षा का स्तर अलग–अलग दिखाई देता है। इसलिए, भारत के युवाओं में कौशल के अभाव में भारत के आर्थिक विकास में इनका योगदान संतोषप्रद स्तर तक नहीं हो पा रहा है, कौशल के अभाव में इस वर्ग की उत्पादकता भी तुलनात्मक रूप से कम दिखाई देती है। भारत के युवाओं में शिक्षा के स्तर को और अधिक सुधारने के लिए अभी हाल ही के समय में भारत में कई नए शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए हैं। जैसे, 150 नए विश्वविद्यालय (वर्तमान में कुल 1070 विश्वविद्यालय कार्यरत) एवं 1570 नए महाविद्यालय (वर्तमान में कुल 43000 महाविद्यालय कार्यरत) स्थापित किए गए हैं। साथ ही, 7 नए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (वर्तमान में कुल 23 भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कार्यरत) एवं 7 नए भारतीय प्रबंध संस्थान (वर्तमान में कुल 20 भारतीय प्रबंध संस्थान कार्यरत) स्थापित किए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है। इसी प्रकार, देश के प्रत्येक जिले में कम से कम एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना भी की जा रही है, वर्तमान में भारत में 650 मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जा चुके हैं। इस प्रकार के प्रयासों से देश के युवाओं में न केवल शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है बल्कि उनका कौशल भी विकसित हो रहा है। अब तो भारत में शिक्षित युवा कई विकसित देशों में पहुंचकर वहां के प्रौद्योगिकी, मेडिकल एवं प्रबंध के क्षेत्र में कई निजी संस्थानों में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं एवं इन देशों के कई निजी संस्थानों को तो एक तरह से भारतीय ही चला रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, वर्ष 2018 में भारत में बेरोजगारी की दर 4.9 प्रतिशत से, कोविड महामारी के चलते, बढ़कर 2020 में 7.5 प्रतिशत हो गई, हालांकि इसमें अब पुनः काफी सुधार दिखाई

ISSN No. 2581-3528

दिया है। इस बीच केंद्र सरकार ने रोजगार के नए अवसर निर्मित करने के उद्देश्य से कई उपाय करते हुए कई नई योजनाओं की शुरुआत की है। देश में एक नए कौशल विकास एवं उद्यम मंत्रालय का गठन किया गया है जिसके द्वारा देश के युवाओं में कौशल विकास करने की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग के क्षेत्र में उद्यमियों को अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के उद्देश्य से बैंकों द्वारा आसान नियमों के अंतर्गत ऋण प्रदान करने हेतु प्रधान मंत्री मुद्रा योजना प्रारम्भ की गई है। इसी प्रकार महिलाओं तथा अनुसूचित जाति एवं जनजाति के उद्यमियों को अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के उद्देश्य से वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए स्टैंड–अप इंडिया नामक योजना प्रारम्भ की गई है।

भारत में महिलाओं एवं अकुशल श्रमिकों के लिए रोजगार के अधिक से अधिक नए अवसर निर्मित किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि इस वर्ग के नागरिकों का भी देश के विकास में योगदान होता रहे। दूसरा, इस वर्ग के नागरिकों को सक्रिय करने से उद्योग जगत के लिए श्रमिकों की उपलब्धता बढ़ेगी, गरीबी में गिरावट दर्ज होगी, महिलाओं को रोजगार मिलेंगे और उनकी उत्पादकता भी देश हित में काम आने लगेगी, (वर्तमान में देश में महिलाओं की आबादी 50 प्रतिशत है जिसका देश के विकास में योगदान तो उच्च स्तर पर हो ही नहीं पा रहा है) तथा भारत श्रम के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनेगा। निचले एवं मध्यम स्तर के श्रमिकों में कौशल विकसित कर उनको आगे के स्तर पर ले जाये जाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं, ताकि निचले स्तर पर नए अकुशल श्रमिकों की भर्ती की जा सके।

भारत में प्रति व्यक्ति आय को अमृत काल के दौरान वर्ष 2047 तक लगभग तिगुना करने की योजना बनाई गई है। प्रति व्यक्ति औसत आय को 445,000 रुपए प्रति वर्ष तक ले जाना है। इसके लिए गांव एवं शहर में निवास कर रहे नागरिकों के बीच औसत आय के अंतर को समाप्त करने की भी योजना बनाई जा रही है। भारत में श्रम बहुत सस्ता है, अतः सस्ते एवं कुशल श्रम को अपनी ताकत बनाकर भारत विनिर्माण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ताकत बनने का प्रयास कर रहा है। साथ ही, भारतीय कुशल श्रम को विभिन्न देशों को भी उपलब्ध कराये जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत में भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करते हुए छोटे–छोटे बच्चों में बचपन में ही सेवा भावना का विकास किया जाता है एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव जगाया जाता है। विशेष रूप से भारतीय महिलाओं में पाए जाने वाले इस सेवा भाव के कारण आज खाड़ी के कई देशों एवं जापान आदि जैसे देशों में भारतीय नर्सों की वहां अस्पतालों में बहुत अधिक मांग है।

केंद्र सरकार एवं कई राज्य सरकारों ने इस संदर्भ में कई विशेष योजनाएं प्रारम्भ की हैं, आज आवश्यकता इस बात की है कि देश के युवाओं को आगे आकर इन योजनाओं का लाभ उठाकर अपने कौशल को विकसित कर देश के विकास में अपने योगदान को बढ़ाना चाहिए ताकि भारत को विकसित राष्ट्र की श्रेणी में लाया जा सके। साथ ही, आज उच्च शिक्षित एवं कौशल प्राप्त भारतीय युवाओं के लिए अन्य देशों में भी रोजगार की दृष्टि से बहुत अच्छे अवसर उपलब्ध हैं। केंद्र सरकार की नीतियों के चलते कई विकसित देश जैसे, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, जापान, कनाडा, अमेरिका, जर्मनी, खाड़ी के देश, आदि तो आज भारतीय मूल के नागरिकों पर विश्वास करते हुए उन्हें राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक आदि क्षेत्रों में आगे बढ़ाने का प्रयास करते नजर आ रहे हैं।

(लेखक भारतीय स्टेट बैंक के उप महाप्रबंधक पद से सेवा निवृत्त हैं)

ISSN No. 2581-3528

वैश्विक नेताओं की सूची में नरेंद्र मोदी शीर्ष पर

संदर्भ: 2023 की रेटिंग में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिर शीर्ष स्थान पर

प्रमोद भार्गव

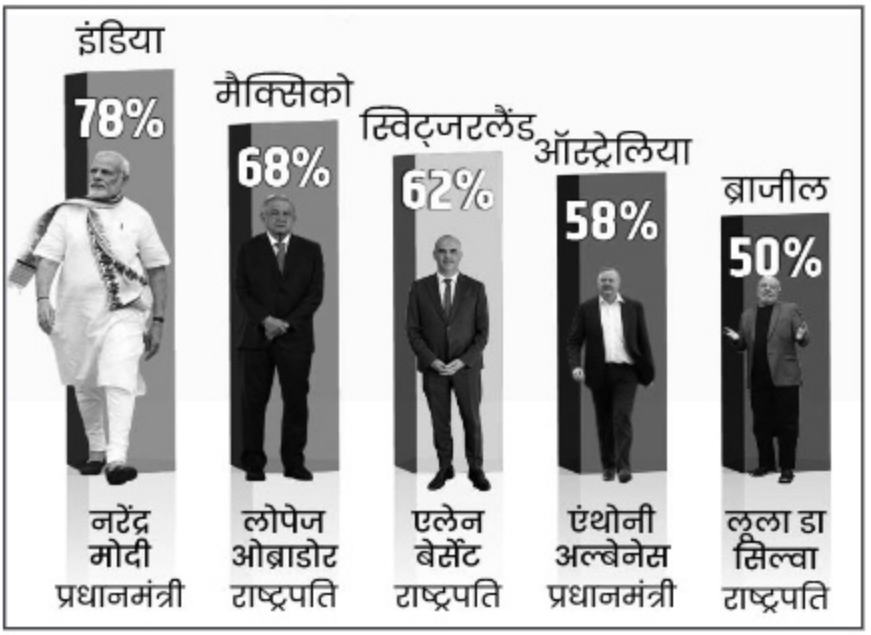

दुनिया में लोकप्रियता के मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया के दूसरे दिग्गज नेताओं को पीछे छोड़ दिया है। इन पिछड़ने वाले नेताओं में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक बहुत पीछे हैं। बिजनेस इंटेलीजेंस कंपनी और मॉर्निंग कंसल्ट के ताजा सर्वे में वैश्विक नेता अनुमोदन सूचकांक में नरेंद्र मोदी ने 22 देशों के शीर्ष नेताओं को पीछे छोड़कर वैश्विक प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच गए हैं। पहले पायदान पर पहुंचे मोदी ने 78 प्रतिशत समर्थन के साथ शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। इस सूची में मोदी के बाद मैक्सिको के राष्ट्रपति लोपेज ओब्रेडोर है। जिन्हें 68 प्रतिशत रेटिंग मिली है। तीसरे स्थान पर आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज है। जो बाइडेन को 40 प्रतिशत रेटिंग के साथ छठवां स्थान मिला है। ब्रिटेन में चुनावों के दौरान सुर्खियों में रहने वाले ऋषि सुनक 30 प्रतिशत रेटिंग्स के साथ 16वें स्थान पर है। मोदी की लोकप्रियता उन मुस्लिम देशों में बढ़ी है, जिन्हें समझा जा रहा था कि कश्मीर से धारा 370 हटाने के बाद ये देश मोदी के खिलाफ हो जाएंगे। यही नहीं भूख और मंहगाई से तबाह पाकिस्तानी आवाम अब कश्मीर का राग अलापने की बजाय अपने नेताओं से यह सवाल पूछ रही है कि कश्मीर के नाम पर लड़ी गई जंगों में गरीबी, भुखमरी और पिछड़ेपन के अलावा क्या मिला ? इधर कश्मीर में तिरंगा लहराने के साथ नया नारा लगाया जा रहा है 'आर–पार खोल दो, कारगिल को जोड़ दो' यानी मोदी की लोकप्रियता का परचम चहुंओर है। जी–20 देशों की अध्यक्षता मिलने से इसे चार चांद लगे हैं।

एक के बाद एक एशियाई व पश्चिमी देशों की यात्राओं में मिली अप्रत्याशित सफलताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को वैश्विक नेता के रुप में उभारकर प्रतिष्ठित कर दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में ज्यादातर अप्रूवल रेटिंग एजेंसी के सर्वे में मोदी की हैसियत बढ़ी है। कोरोना महामारी के कारण कई देशों और उनके नागरिकों की आर्थिक स्थिति बदहाल हुई है। दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला समृद्ध देश अमेरिका भी इससे अछूता नहीं रहा। महामारी के चलते बड़े पैमाने पर लोगों ने रोजगार गंवाया और इसका असर यह हुआ कि अमेरिका में भूख की समस्या भयावह हो गई। अमेरिका की सबसे बड़ी भूख राहत संस्था 'फीडिंग अमेरिका' की रिपोर्ट के अनुसार दिसंबर–2021 के अंत में पांच करोड़ से ज्यादा लोग खाद्य संकट से जूझ रहे थे। यानी अमेरिका का प्रत्येक छठा व्यक्ति भूखा था। यही नहीं बालकों के मामले में स्थिति का और भी बुरा हाल था, प्रत्येक चौथा बच्चा भूखा रहने को मजबूर हुआ। फीडिंग अमेरिका नेटवर्क ने एक महीने में 54.8 करोड़ आहार के पैकेट बांटे, जिन्हें प्राप्त करने के लिए अमेरिका के उटा में कारों में बैठकर लोग लंबी कतारों में लगे रहे। अमेरिका से आया यह दृष्य अविश्वसनीय जरूर लगता है, लेकिन हकीकत है। इधर भारत में अनाज का उत्पादन और भंडारण इतना बढ़ता जा रहा है कि वित्तीय वर्ष 2011–22 में खाद्य मंत्रालय को विदेश मंत्रालय से आग्रह करना पड़ा था कि दुनिया के कुछ ऐसे गरीब देश तलाशों, जिन्हें यह अनाज मुफ्त में बतौर मदद दिया जा सके, वरना इसे फेंकना पड़ेगा। इसीलिए जानी–मानी अंतरराष्ट्रीय मूल्यांकन संस्था डालबर्ग को एक अध्ययन के आधार पर कहना पड़ा था कि 97 प्रतिशत भारतीय मानते हैं कि चंद कमियों के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार में भरोसा है। इसी भरोसे ने देश को विश्व की पांचवीं बड़ी अर्थव्यस्था के पायदान पर खड़ा कर दिया है।

कोरोना से जब दुनिया में हाहाकार मची हुई थी, तब नरेंद्र मोदी एकाग्रचित्त से भारत ही नहीं दुनिया का कोरोना से मुक्ति के लिए संघर्षरत थे। कोविड–19 की पहली लहर में जब दुनिया उपचार के लिए दवा तय नहीं कर पा रही थी, तब भारत ने हाइड्रोक्सी–क्लोरोक्वीन गोलियां अमेरिका समेत पूरी दुनिया को उपलब्ध कराईं।

ISSN No. 2581-3528

नतीजतन दुनिया में मोदी की लोकप्रियता में अप्रत्याषित वृद्धि हुई। इस कालखंड़ में अमेरिका की एजेंसी मॉर्निंग कंसल्ट ने एक सर्वे किया। इस सर्वे में साफ हुआ कि मोदी की लोकप्रियता निरंतर न केवल बनी हुई है, बल्कि बढ़ी भी है। सर्वे में मोदी की प्रसिद्धी की दर 55 प्रतिशत रही। इसे सभी प्रमुख वैश्विक नेताओं में सबसे अधिक अंक मिले। रेटिंग एजेंसी फिच व एसबीआई ने कोरोना काल में आर्थिक गतिविधियां लंबे समय तक बंद रहने के बावजूद माना कि देश के आर्थिक हालात बेहतर हो रहे हैं। बिगड़ी आर्थिक व्यवस्था की चाल को सुधारने के लिए सरकार के स्तर पर अनेक प्रयास हो रहे हैं। नतीजतन आर्थिक समृद्धि भविष्य में बनी रहना तय है। फिच ने माना कि सरकार ने श्रम और कृषि में जो कानूनी सुधार किए हैं। उससे बिचौलिए खत्म होंगे और देश खुशहाल होगा।

2014 में जब मोदी सरकार ने सत्ता संभाली थी, तब भारत की अर्थव्यवस्था बदहाल थी। महंगाई आसमान पर थी और दूरसंचार, कोयला, राष्ट्रमंडल खेल एवं आदर्श सोसायटी के घोटालों के उजागर होने से देश शर्मसार था। विदेशी पूंजी निवेश थम गया था। किंतु धीरे–धीरे संस्थागत सुधारों पर बल देते हुए सरकार ने बद्तर हालातों को पूरी तरह नियंत्रण में ले लिया है। यही वजह है कि पिछले तीन साल में 151 अरब डॉलर का पूंजी निवेश भारत में हुआ है। बीते वित्तीय वर्ष में यह उछाल 36 प्रतिशत रहा है। कर कानूनों में सुधार की दृष्टि से जीएसटी विधेयक पारित कराना क्रांतिकारी पहल रही। धन का लेन–देन पारदर्शी हो, इस नजरिए से डिजिटल आर्थिकी को बढ़ावा देने के लिए नोटबंदी करना साहसिक पहल थी। जनधन और उज्ज्वला जैसी योजनाओं पर तकनीकी अमल से गरीब को वास्तव में लाभ मिला है। नए कानून लाकर जमीन जायदाद के व्यापार और एनपीए पर जिस तरह से शिकंजा कसा है, उससे लगता है, भविष्य में अब रियल स्टेट कारोबार में हेराफेरी और बैंकों से कर्ज लेकर विजय माल्या, नीरव मोदी एवं मेहुल चोकसी की तरह चंपत हो जाने वाले कारोबारियों की मुश्कें कसेंगी। इन उपायों से ऐसा लगता है कि देश का ढ़ांचागत कायांतरण हो रहा है। युवाओं को नए रोजगार सृजित करने की दृष्टि से स्टार्टअप और स्टेंडअप जैसी योजनाएं भी लागू की गईं। गोया, भारत हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिलना और देश को रेटिंग एजेंसियों द्वारा सम्मानजनक स्थान देना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धियों के बिना संभव नहीं है। इस हेतु नरेंद्र मोदी ने एक के बाद एक बिना रुके, बिना थके एशियाई व पश्चिमी देशों की सैंकड़ों यात्राएं कीं। इन यात्राओं में मिली अप्रत्याशित सफलताओं ने प्रधानमंत्री को वैश्विक नेता के रूप में उभार दिया है। द्विपक्षीय रिश्तों में उन्होंने नए प्राण डाले। इन सभी यात्राओं की खास बात यह रही कि हिंदी में भाषण देने के बावजूद राष्ट्रीय ही नहीं, अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में भी मोदी का जादू सिर चढ़कर बोलता रहा है। पिछले कुछ दशकों में ऐसा माहौल भारतीय प्रधानमंत्री तो क्या अन्य किसी देश के मुखिया के विदेशी दौरों में दिखाई नहीं दिया। उनके इस जादू के असर का प्रमुख कारण स्पष्टवादिता, दृढ़ता और वैश्विक आतंकवाद को खत्म करने का कठोर संदेश रहा। मोदी के इसी आचरण के कारण ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरेन उनके प्रशंसकों की सूची में शामिल हो गए हैं। अपने पक्ष में मिले इस विश्वव्यापी समर्थन को देखते हुए ही, मोदी ने फिजी में कहा भी था कि 'भारत विश्व गुरु की भूमिका निभाएगा और अपनी ज्ञानशक्ति से विश्व का नेतृत्व करेगा।' दरअसल भविष्य का राजनीतिक नेतृत्व ज्ञान आधारित नेतृत्व पर ही टिका होगा, यह संभावना अमेरिका और ब्रिटेन भी जता चुके हैं।

राष्ट्राध्यक्षों की विदेश यात्राओं के दौरान यह घटना विलक्षण ही होती है कि कोई मेजबान देश अतिथि प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति को अपने देश की सर्वोच्च संवैधानिक संस्था संसद में बोलने का अवसर दे? लेकिन मोदी ने नेपाल, भूटान और फिजी की संसदों को तो संबोधित किया ही, विकसित देश आस्ट्रेलिया की संसद को संबोधित करने का भी मौका मिला है। इस तरह किसी पश्चिमी देश की संसद को संबोधित करने वाले मोदी पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। मोदी की चतुरता प्रवासी भारतीयों को लुभाने में भी पेश आती रही है। इससे पहले देश का कोई प्रधानमंत्री अपने ही रक्त संबंधियों की भावनाओं को इस तरह सम्मोहित नहीं कर पाया ? आस्ट्रेलिया में 28 साल बाद तो फिजी में 33 साल बाद भारत का कोई प्रधानमंत्री अपने रक्त–संबंधियों से दुख–दर्द बांटने पहुंचा था। मोदी के पहले राजीव गांधी और इसके पहले इंदिरा गांधी फिजी गए थे। फिजी में 40 प्रतिशत भारतीय मूल के लोगों की आबादी है। इनमें से ज्यादातर ब्रिटिश शासनकाल 1879 से 1916 के बीच गिरमिटिया मजदूरों के रुप में ले जाए गए थे। फिजी की 83 फीसदी अर्थव्यवस्था वन संपदा, मछली और पर्यटन उद्योग पर टिकी है। लेकिन विडंबना है कि इस उद्योग के बड़े भाग पर वर्चस्व महज दो फीसदी गोरी आबादी का है। बावजूद फिजी की राजनीति में भारतवंशियों का दबदबा कायम है। 1997 में फिजी में जब लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ तो उसके प्रधानमंत्री भारतवंशी महेंन्द्र सिंह चौधरी बने। फिजी में भारतीयों की अब राजनीति के साथ–साथ आर्थिक हैसियत भी बढ़ रही है। इसीलिए मोदी को फिजी की संसद को संबोधित करने का अवसर मिला था। फिजी भारत के निकटता अपनी ऐतिहासिक–सांस्कृतिक विरासत और हिंदी के कारण है। वहां हिंदी खूब पढ़ी व बोली जाती है। फिजी विश्व हिंदी सम्मेलन भी आयोजित कर चुका है। इंदिरा गांधी ने भी फिजीवासियों के इस मर्म को समझा था। इस कारण वे भी फिजी गई थीं और उन्होंने द्विपक्षीय वार्ता में फिजी को महत्व दिया था। मोदी ने फिजी सरकार से कृषि व दुग्ध उद्योग के क्षेत्र में बढ़ावे का करार किया था। फिजी को डिजीटल क्षेत्र में भारत मदद कर रहा है। प्रवासी भारतीय हर साल अपने नाते–रिश्तेदारों को 70 अरब डॉलर भारत भेजते हैं। मोदी की निगाहें प्रवासी भारतीयों के इस निवेश को और बढ़ाने पर भी टिकी रही हैं। इसलिए प्रवासी भारतीय निरंतर भारत में निवेश कर रहे हैं। चूंकि ज्यादातर प्रवासी भारतीय गरीबी की हालत में अपने साथ धरोहर के रूप में गीता और रामायण साथ ले गए थे। मोदी ने इसी सांस्कृतिक विरासत को लेकर दुनिया के देशों की अनेक यात्राएं कीं, इसलिए दुनिया में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारतीयों के बीच लोकप्रिय हो रहे हैं। दूसरी तरफ वैश्विक आतंकवाद की खिलाफत और मोदी द्वारा सैंकड़ों देशों से नए धरातल पर बनाए द्विपक्षीय संबंधों ने मोदी की लोकप्रियता तो बढ़ाई ही, उन्हें वैश्विक नेता के रुप में स्थापित करने का काम भी किया है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

अधम समाज की सोच

नरेन्द्र भदौरिया

घृणा और ईर्ष्या में भरे लोगों के लिए छल जीवन का सबसे बड़ा बल होता है। ऐसे लोग बाहें खोलकर दूसरे को लक्षित कर पीड़ा पहुँचाने की स्वतन्त्रता चाहते हैं। ऐसी कोई सुविधा नहीं मिलने पर निपट कृपणता का प्रदर्शन करते हैं।

भारत में इस्लाम को मानने वालों ने आसेतु हिमाचल एक सुविधाजनक कुतर्क गढ़ रखा है कि किसी को भी किसी से प्रेम करने की स्वतन्त्रता है। भारत के संविधान में जोड़े गये सेक्युलर शब्द की अनुचित व्याख्या करके प्रेम की नयी व्याख्या से एक बड़ी विकट सामाजिक बुराई को फैलाया जा रहा है। यह है– लव जिहाद। केरल राज्य में सबसे पहले वाममार्गियों की पहल पर हिन्दू लड़कियों ने अपने घरों की चौखट लाँघना शुरू किया। बड़े जोर–शोर से कहा गया कि केरल का सौन्दर्य अब घूँघट में छिपाकर कोई रख नहीं पाएगा। केरल में कम्युनिस्टों की यह सोच ईसाईयों को भी तब बड़ी लुभावनी लगी थी। वही केरल जहाँ 1921में मोपला नरसंहार की वीभत्स घटना हुई थी। तब मालाबार की हजारों हिन्दू लड़कियों को इस्लामी आक्रान्ताओं ने बलात छीनकर निकाह करा दिया था।

वामपन्थी इतिहासकारों ने उस क्रूरतम घटना को मोपला विद्रोह कहकर प्रशंसा की थी। वामपन्थी इतिहासकारों ने पुस्तकों में यह कुतर्क जोड़ा था कि अग्निकाण्ड और सिलसिलेवार हत्याएं तो सम्पन्न हिन्दुओं से भूमि तथा धन हथियाने के लिए की गयी थीं। निर्धन मोपला मुसलमानों ने जीने के अधिकार के लिए यह सब किया था ऐसे कुतर्क देते हुए इन वामपन्थियों ने पूरे घटनाक्रम को उचित ठहराया था। वामपन्थियों के संग स्वर मिलाकर कुछ राजनीतिक दल भी यह कहते आये हैं कि उस समय सम्पन्न हिन्दुओं के बचाव में जो आया वह मारा गया। उनके पास धन, जमीन और जोरू (यानी महिलाएं) जो भी था सब लूट लिया गया था। इस नरसंहार के नायक इस्लामी जिहादी थे। जिन्होंने हिन्दू समाज के इस्लामीकरण के विरुद्ध खड़े लोगों को सीधे आक्रमण करके मार दिया था। जिसने डरकर कलमा पढ़ लिया और लड़कियां/महिलाएं उनको सौंप दी, वे लोग गोल टोपी पहना कर जीवित छोड़ दिये गये थे। भारत के समस्त राज्यों के विद्यार्थियों की कई पीढ़ियों ने इसी रूप में मोपला काण्ड की वीभत्सता को जाना है।

केरल से ही फिर एक हवा बही कि इस्लाम में पर्दा प्रथा मजहबी अनिवार्यता है जबकि हिन्दू समाज में यह कुप्रथा है। इससे हिन्दू समाज की महिलाएं खुली हवा में साँस नहीं ले पातीं। हिन्दू बालाएं आधुनिकता से वंचित रहने को विवश की जाती हैं। यह प्रचार भारत के हिन्दू समाज के बहुत से लोगों के साथ हिन्दू लड़कियों को बड़ा लुभावना लगा। कुतर्क गढ़ने वालों को पलट कर किसी हिन्दू लड़की या बुद्धिजीवी ने यह उत्तर नहीं दिया कि प्राचीन काल से हिन्दू समाज में पर्दा प्रथा नहीं थी। यह तो बदचलन इस्लामी आक्रान्ताओं से महिलाओं ने बचाव के लिए स्वयं पर थोपा था। संकट काल की यह एक विवशता भर थी जो बदलते परिवेश में अनैतिकता के काले बादलों के कारण दूर नहीं की जा सकी।

कुतर्कों के बल पर यह बात हवा में उड़ा दी गयी कि भारत की महिलाएं वैदिक काल से विद्या और सामाजिक गतिविधि के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी रही हैं उन्हें पिछड़ा नहीं कह सकते। पर्दा प्रथा तो भारत में घुस आये ऐसे समाज के कारण लादनी पड़ी थी जो अनैतिक और अमर्यादित आचरण के अभ्यस्त हैं।

कौन नहीं जानता कि भारत में विवाह की आठ रीतियों को शास्त्रीय मान्यता रही है। कौन कह सकता है कि सनातन संस्कृति को मानने वाली महिलाओं को स्वेच्छा से विवाह की स्वतन्त्रता नहीं थी। स्वयंवर के उत्सव राजसी स्तर तक होते थे। निचले पायदान तक लड़कियां वर चुनने के लिए आत्मनिर्भर थीं, पर उनकी स्वतन्त्रता अमर्यादित नहीं थी। द्रौपदी यदि स्वयं मना नहीं करतीं तो कर्ण उनका वरण कर सकता था। सीताजी के हाथों की वरमाला पहनने की इच्छा लेकर जनक के रंगभवन में रावण भी उपस्थित हुआ था।

भारत में इस्लाम आया तो उसके एक हाथ में आस्था की पुस्तक थी तो दूसरे हाथ में घृणा की तलवार। इस्लाम के कबीलाई समूहों ने ऐसे क्रूर स्वभाव के साथ सारे संसार की सीमाएं और मानवता की मर्यादाएं लाँघी। भारत को छोड़कर उसे प्रायः हर देश में पूरी सफलता मिलती गयी। 1947 के अविभाजित भारतीय भूभाग पर ध्यान दें तो वर्तमान काल में यहाँ कुल मिलाजर 52 करोड़ से अधिक मुस्लिम जनसंख्या बसी हुई है। यह जनसंख्या भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान में बंटी है। जिनके पूर्वज अरबी नहीं भारत के हिन्दू ही थे। जिन्हें छल, बल से मुस्लिम बनने पर विवश किया गया।

भारत के प्रायः हर राज्य में लव जिहाद का एक शब्द कई दशक से चर्चा में है। यह भी केरल से शुरू होकर महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र फिर देश के प्रत्येक भाग तक पहुँच चुका है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश सहित कुछ राज्य इसके विरुद्ध विधान बना चुके हैं या बना रहे हैं। तद्यपि लव जिहाद यानी हिन्दू, बौद्ध या ईसाई लड़कियों को प्रेम के छलावे में फँसाकर इस्लामी दीवार के भीतर ले जाकर क्रूरता का नग्न प्रदर्शन करके तृप्ति बटोरी जा रही है। ऐसे मुस्लिम युवकों को आतंकी गिरोहों के साथ मजहबी कठमुल्लों से सीधी सहायता मिल रही है। देश के गुप्तचर तन्त्र के साथ समाज से यह सच्चाई अब छिपी नहीं है। मस्जिदों के भीतर प्रायः इसके लिए घृणास्पद तकरीरें होती हैं। लव जिहाद भारत में हिन्दू लड़कियों के विरुद्ध एक बड़ा जिहादी आक्रमण है। बहुसंख्य मुस्लिम संगठनों की यह घृणास्पद जुटान है। ऐसे युवकों को जिहादी फण्ड से धन दिये जाने की सूचनाएं गुप्तचर संगठनों को निरन्तर मिलती आ रही हैं।

परन्तु सबसे बड़ी दुविधा यह है कि हिन्दू

ISSN No. 2581-3528

समाज के पीड़ित परिवारों और उनकी लड़कियों को हिन्दू समाज अनारक्षित छोड़कर बस निन्दा तक सीमित है। अब इतने भर से कुछ न होगा। जिन्होंने भूल की उनको कोसने से क्या होगा। आग बढ़ती जा रही है। केरल के शीर्ष पुलिस महानिदेशक जैकब पुन्नोज को लव जिहाद प्रकरणों की एक विस्तृत जाँच का निर्देश वहाँ के उच्च न्यायालय ने दिया था। वर्ष 2009 में उन्होंने जो विवरण न्यायमूर्ति के.टी. शंकरन को सौंपा वह बहुत भयावह है।

अकेले केरल में प्रति वर्ष ढ़ाई से साढ़े तीन हजार हिन्दू लड़कियां लव जिहाद के नाम पर क्रूरता की बलि चढ़ा दी जाती रही हैं। पुलिस रिपोर्ट के अनुसार केरल की हिन्दू लड़कियों की यह ऐसी संख्या है जो कथित धोखेबाज प्रेमियों द्वारा मार डाली जाती हैं। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण यह होता है कि वह हिन्दू धर्म त्याग कर इस्लाम मजहब में मतान्तरित होने को सहमत नहीं होतीं। तब इनकी बलि चढ़ा दी जाती है अथवा स्वयं मृत्यु को गले लगा लेती हैं। इनके साथ ईसाई लड़कियों को भी इस्लामी लम्पट अपने पँजों में जकड़ कर इनके प्राण ले लेते हैं।

ईसाई लड़कियों के साथ भी ऐसी घटनाएं केरल में हो रही हैं। यही कारण है कि ईसाई संगठन भी अब लव जिहाद के विरुद्ध बोलने लगे हैं। केरल में कभी वाममोर्चा तो कभी कांग्रेसी मोर्चा सत्ता की बागडोर थामता है। दोनों मोर्चे लव जिहाद पर चुप रहते हैं। क्योंकि मुस्लिम वोट बैंक खिसकने का डर उनको सताता है। यह समस्या किसी राजनीतिक दल की नहीं है। ऐसी कुन्द मानसिकता समाज की है जिस पर एक ओर बेटियों की भ्रूण हत्या के आरोप लगते रहे हैं दूसरी ओर उनकी शिक्षा और पालन पोषण में बेटों की तुलना में विभेद की घटनाएं सुनी जाती रही हैं। बेटियों के विवाह को लेकर कुरीतियों के नाम पर लोभ ग्रस्त समाज उनको सहेज नहीं पा रहा, क्या यह बात सही नहीं है। सहने की भी एक सीमा होती है। जब घर की चौखट के भीतर स्नेह और आत्मीयता की साँसे थमने लगेंगी तो बाहर की हवा तो आकर्षक लगेगी ही। कुछ लोग कहते हैं अनेक पीडित लड़कियों ने स्वतन्त्रता के नाम पर फूहड़ता को ओढ़ लिया।

हमारे समाज ने अब तक सहिष्णुता के

नाम पर भेड़िये पाले हैं। उनके जबड़ों के बीच हमारी बेटियाँ ही कराह रही हैं। बहुत बड़े वर्ग को मतान्तरित किया जा रहा है। जिसे भेड़िये दबोचते हैं उसका बचाव और सबल विरोध तो दूर एक स्वर से हम उसे ही दोषी ठहरा कर हाथ झाड़ लेते हैं।

भारत में लव जिहाद ही तो था जब अकबर ने जयपुर घराने की लड़की से बलात निकाह किया था। अकबर की नीयत मेवाड़ पर भी अटकी थी। मुगल काल में राजस्थान सहित देश के अनेक राज्यों के धनी, गुनी घरानों पर मुगलों की हठी नीयत हावी थी। मेवाड़ चित्तौड़ बार–बार बेटियों के सम्मान की लड़ाई लड़ते लुटता मिटता रहा। दिल्ली से लेकर पंजाब सिन्ध और भारत के बहुत से क्षेत्रों के हिन्दू समाज पर अत्याचार की यह सबसे तेज धार थी। बेटियों महिलाओं को लूटने और बच्चों युवकों को मार डालने के सिलसिले सर्वत्र देखे गये। समय बदल गया पर लड़कियों की लूट नहीं थमी। भारत की स्वतन्त्रता के आन्दोलन के समय जवाहर लाल नेहरू की बेटी इन्दिरा को महात्मा गाँधी भी नहीं बचा सके। इन्दिरा को जहाँगीर फिरोज खान ने प्रेमजाल में फँसाकर 26 मार्च 1942 को लन्दन की एक मस्जिद में निकाह करा लिया था। महात्मा गाँधी को यह सूचना स्वयं नेहरू ने दी थी। यह लव जिहाद की बड़ी घटना थी। गाँधी जी को लगा कि स्वतन्त्रता आन्दोलन की हवा निकल सकती है। उन्होंने दोनों को भारत लौटाने के लिए बाह्य उपाय किये। दिल्ली लौटने पर वैदिक रीति से विवाह रचाया। जहाँगीर नाम को फिरोज ने छोड़ दिया। तब गाँधी जी ने अपनी जातीय पहिचान दोनों को देकर सारी घटना पर पानी फेरने का उपक्रम किया था। नेहरू डायनेस्टी के लेखक के. एन. राव ने अपनी पुस्तक में सारी बात विस्तार से लिखी है। पुस्तक में उन्होंने यह भी संकेत किया कि एक मुस्लिम से इन्दिरा के प्रेम और विवाह से नेहरू से अधिक महात्मा गाँधी व्यथित थे।

इन्दिरा गाँधी के बहुत निकट रहे मुहम्मद यूनुस ने तो अपनी पुस्तक में यह तक लिखा है इन्दिरा के छोटे बेटे संजय के खतना की मुस्लिम रस्म भी इन्दिरा गाँधी ने कुछ मुस्लिम नेताओं के दबाव में करायी थी।

इन्दिरा गाँधी के अतिरिक्त बहुत से राजनीतिक नेता, फिल्मी हस्तियाँ इस कुचक्र की उत्प्रेरक बनती रहीं। भारत के हिन्दू समाज को तोड़ने का यह कुचक्र अन्तर राष्ट्रीय षड्यन्त्र का भाग है या कहें कि भारत के भीतर इतने बड़े कुचक्र के रचनाकार कुण्डली मारे जमे हैं। दोनों बातें सच हो सकती हैं और यह भी बड़ी सच्चाई है कि भारत के हिन्दू परिवार अपनी देहरी की लाज बचाने में निर्बल सिद्ध हो रहे हैं। हिन्दू विवाह संस्कार को भड़काऊ दिखावे का माध्यम बनाने का दुष्परिणाम है कि बहुत से हिन्दू परिवार अपनी बेटियों के किसी योग्य जामाता की बाट जोहते रह जाते हैं। उनका सामर्थ्य खर्चीले विवाह का बोझ उठाने का नहीं होता, फिर तो बेटियों पर मनचाहे उन्मुक्त प्रेम का ज्वर चढ़ता है जो उन्हें बहुत गहरे खन्दक में धकेल देता है। बेटियों को कोसने भर से समाज को कुछ फल नहीं मिलेगा। विवाह सम्बन्धी रीति में सुधार होने चाहिए। हिन्दू कुटुम्ब प्रबोधन से भी आशा की किरणें झलक सकती हैं।

(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार एवं समाजसेवी हैं)

ISSN No. 2581-3528

अप्सु अंतः अमृतम्

जल में अमृत है अर्थात् जल है तो सृष्टि है।

प्रभाकर वर्मा

विकास की अंधी दौड़, मनुष्यों की अति महत्वाकांक्षा, प्रकृति के अतिदोहन ने, सिर्फ अपना प्रदेश (कुछ अपवाद को छोड़कर) या देश में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के समक्ष जल संकट की समस्या आ खड़ी हुई है।

गांवों एवं शहरों के अधिकांश तालाबों/जोहड़ों की भूमि के अनधिकृत कब्जे, तालाबों में कूड़ा–कचड़ा एवं घरों एवं शोचालयों के अपशिष्ट जल डाले जाने के कारण, तालाबों की जल संग्रहण एवं भूमि की क्षमता बुरी तरह प्रभावित हुई है।

फलस्वरूप, वर्षा काल में शहरों एवं गांवों में बाढ़ की समस्या आ खड़ी हुई है। साथ ही भूमि का जल स्तर दिनोंदिन नीचे गिरता जा रहा है। वर्तमान की भू–जल की इस स्थिति को देखते हुए वह दिन दूर नहीं कि अगली पीढ़ी के लिए जल ही नहीं बचे अर्थात् सृष्टि ही ना बचे।

यह कोरी कल्पना ही नहीं बल्कि विश्व के कई देश तथा अपने देश के कई प्रदेशों के समक्ष ऐसी भयावह स्थिति खड़ी हो चुकी है।

"ACT NOW OR NEVER" "अभी या कभी नहीं" अतः इस दिशा में हरियाणा प्रांत के माननीय मुख्यमंत्री आदरणीय मनोहर लाल जी ने पहल की। हरियाणा प्रदेश को जल संकट से बचाने हेतु वर्ष 2018 के अक्टूबर में तालाब प्राधिकरण का गठन कर पूरे देश के समक्ष तालाबों/जोहड़ों में बेतहाशा हो रहे कब्जों से बचाने एवं अनको फिर से पुनर्जीवित करने का बड़ा ही महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया है।

हरियाणा तालाब प्राधिकरण अपने गठन अक्टूबर 2018 के बाद से ही प्रदेश के सभी प्रदूषित तालाबों को पुनर्स्थापित एवं पुनर्जिवित करने में अविरत गति से लगा हुआ है। इसके लिए प्राधिकरण ने सर्वप्रथम पूरे प्रदेश के सरकारी भूमि पर स्थित सभी तालाबों की डाटा Pond Data Managment system (PDMS) APP के माध्यम से एकत्रित किया जिनमें ग्रामीण/शहरी, ऐतिहासिक/धार्मिक, प्रदूषित एवं अतिप्रवाह/ प्रदूषित किन्तु अति–प्रवाह नहीं, स्वच्छ, क्षेत्रफल एवं उनकी वर्तमान उपयोगिता के अनुसार वर्गीकृत भी किया गया है जो कि प्राधिकरण के वेवसाइट www.hpwwma.org.in में उपलब्ध है। वर्तमान में पूरे प्रदेश में कुल तालाब (ग्रामीण–19384 एवं शहरी–897) हैं मा. मुख्यमंत्री, हरियाणा के सतत् मार्गदर्शन में प्राधिकरण ने प्रदेश के अति प्रवाहित तालाबों सहित सभी प्रदूषित तालाबों के जीर्णोद्धार हेतु, अपने वार्षिक कार्य योजना को वितीय वर्ष 2022–23, 2023–24, 2024–25 को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है।

Details of Ponds

H:- Historical R:- Religious

Total Ponds :19384
Rural :- 18487 (H :509, R : 589)
Urban :- 897 (H :103, R : 80)

Ponds having area=> 0.5 Acre :18451
Rural :- 17634 (H :505, R : 573)
Urban :- 817 (H :93, R : 79)

Ponds having area<0.5 Acre :933
Rural :- 853 (H :4, R : 16)
Urban :- 80 (H :10, R : 1)

Total Ponds as per Present Condition

Polluted & Overflowing :1982
Rural :- 1928 (H : 153, R : 59)
Urban :- 54 (H : 5, R : 10)

Polluted but not Overflowing :10243
Rural :- 9774 (H : 236, R : 193)
Urban :- 469 (H : 61, R : 38)

Clean :5086
Rural :- 4972 (H : 94, R : 285)
Urban :- 114 (H : 11, R : 15)

Dry Pond :2055
Rural :- 1798 (H : 26, R : 51)
Urban :- 257 (H : 26, R : 17)

Total Ponds as per Usage

Cattle Ponds :12056
Rural :- 11701
Urban :- 355

Irrigation Ponds :597
Rural :- 570
Urban :- 27

Pisciculture Ponds :769
Rural :- 7663
Urban :- 34

Polluted Ponds (Not in any Use) :3920
Rural :- 3679
Urban :- 241

Canal Connected :4085
Rural :- 4027
Urban :- 58

ISSN No. 2581-3528

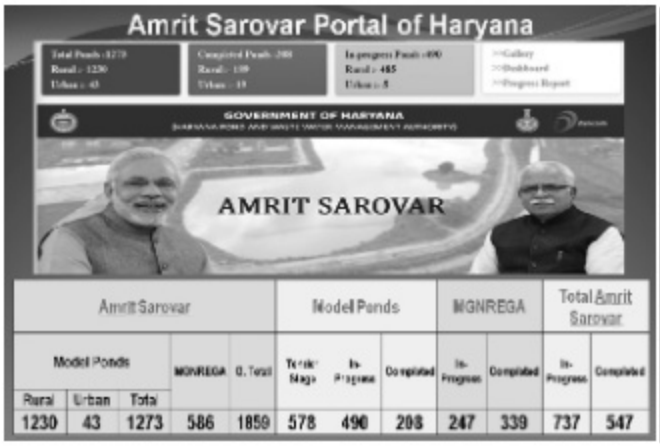

Present Status of Works with HPA

Schemes	No. of Ponds in AAP			Digital Survey			Working Drawing Stage			Under AA		
	Rural	Urban	Total Target	Total Target	Achieved	Balance	Total Target	Achieved	Balance	Total Target	Achieved	Balance
Amrit Sarovar	1230	43	1273	1273	1273	0	1273	1273	0	1273	1035	238
CM-Announcement	5	0	5	5	5	0	5	5	0	5	5	0
Model Ponds (Ph-I & II) FY: 2021-22 & 22-23	1186	117	1303	1303	1303	0	1303	1301	2	470	24	446
SBM-G (GWM) FY: 23-24	1804	0	1804	1804	1804	0	1804	1767	37	443	21	422
NGT (FY: 23-24)	42	0	42	42	36	6	42	5	37	0	0	0
Total	4267	160	4427	4427	4421	6	4427	4351	76	2191	1085*	1106
Model Ponds FY: 24-25	779	226	1005	1005	246	759	1005	114	891	29	0	29

Note :- * 23 Ponds restored by Guru Jal Society without AA of HPA
Out of 4427 Model Ponds : 1859 (1273 Model Ponds + 586 MGNREGA) will be restored by 15th August, 2023 as Amrit Sarovar.
Balance 3054 model ponds will be restored by 31st March, 2024.
@ In the FY: 2024-25 total 2680 ponds (1005 identified + 995 are being identified) will be restored by 31st March, 2025.

इसके अलावा अपने देश की स्वतंत्रता के 75 वीं अमृत महोत्सव मिशन के तहत अपने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के निर्देश पर प्रदेश के प्रत्येक जिले में 75 अमृत सरोवर योजना के तहत प्रदेश के कुल 22 जिलों में कुल 1859 अमृत सरोवर को 15 अगस्त 2023 तक पुनर्जीवित करने की कार्य योजना पर भी तीव्र गति से कार्य हो रहा है।

पुनर्जीवित तालाबों की कुछ झलकियां

उपरोक्त वार्षिक कार्य योजनाओं के तहत कुल 2945 गांवों के कुल 5432 तालाबों पर कार्य चल रहा है। जिनमें 208 तालाबों को पुर्नजीवित/जीर्णोद्धार किया जा चुका है। पुर्नजीवित तालाबों की कुछ झलकियां (इन तालाबों का जीर्णोद्धार/पुनर्जीवित करने तथा उनमें प्रवाहित अपशिष्ट जल को उपचारित करने की वैज्ञानिक पर्यावरणीय स्थितरता, प्राकृतिक विधि की जानकारी अगले अंक में...।

(लेखक के.लो.नि. विभाग से अतिरिक्त महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में हरियाणा तालाब एवं अपशिष्ट जल प्रबंधन प्राधिकरण में कार्यकारी उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं।)

ISSN No. 2581-3528

नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिए ठोस और समग्र प्रयास करना क्यों आवश्यक है?

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

शिक्षा किसी की पूर्ण मानव क्षमता को साकार करने, एक न्यायसंगत समाज बनाने और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण में भारत के निरंतर उत्थान और वैश्विक नेतृत्व के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करना महत्वपूर्ण है। सार्वभौमिक उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया के लाभ के लिए हमारे देश की प्रचुर प्रतिभा और संसाधनों को विकसित करने के लिए सबसे अच्छा मार्ग है। तेजी से बदलते रोजगार परिदृश्य और वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र के साथ, यह पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि बच्चे न केवल सीखें, बल्कि यह भी सीखें कि कैसे सीखना है। इस प्रकार, शिक्षा को सिर्फ किताबी ज्ञान के बजाय छात्रों को यह सिखाने की ओर अग्रसर करना चाहिए कि कैसे सही तरीके से सोचें और समस्याओं को हल करें, रचनात्मक और बहु–विषयक बनें, और उपन्यास और बदलते क्षेत्रों में नई सामग्री को नया रूप दें, अनुकूलित करें और अवशोषित करें। शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक, समग्र, एकीकृत, पूछताछ–संचालित, खोज–उन्मुख, शिक्षार्थी–केंद्रित, चर्चा–आधारित, लचीला और निश्चित रूप से आनंददायक बनाने के लिए शिक्षाशास्त्र को विकसित करना होगा। विज्ञान और गणित के अलावा, पाठ्यक्रम में बुनियादी कला और शिल्प, मानविकी, खेल और फिटनेस, भाषा, साहित्य, संस्कृति और मूल्यों को शामिल किया जाना चाहिए ताकि शिक्षार्थियों के सभी पहलुओं और क्षमताओं को विकसित किया जा सके और शिक्षा को अधिक व्यापक, उपयोगी बनाया जा सके। शिक्षा से व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र का विकास करना चाहिए, छात्रों को नैतिक, तर्कसंगत, दयालु और देखभाल करने के साथ–साथ उन्हें लाभकारी, सफल उद्यमी या कर्मचारी बनने के लिए तैयार करना चाहिए।

प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक प्रणाली में उच्चतम गुणवत्ता, समानता और अखंडता लाने वाले प्रमुख सुधारों को लागू करके सीखने के परिणामों की वर्तमान स्थिति को पाटा जाना चाहिए।

मोदी सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति इक्कीसवीं सदी की पहली शिक्षा नीति है, और इसका उद्देश्य हमारे देश की कई बढ़ती विकासात्मक अनिवार्यताओं को संबोधित करना है। यह नीति भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों पर निर्माण करते हुए, एस डी जी 4 सहित इक्कीसवीं सदी की शिक्षा के आकांक्षी लक्ष्यों के साथ संरेखित एक नई प्रणाली बनाने के लिए, विनियमन और शासन सहित शिक्षा संरचना के सभी पहलुओं को संशोधित और सुधारित करने का प्रस्ताव करती है। शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर विशेष बल देती है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा को न केवल संज्ञानात्मक क्षमता (साक्षरता और संख्यात्मकता) बल्कि सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमता और स्वभाव भी विकसित करना चाहिए।

देश की स्थानीय और वैश्विक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, साथ ही इसकी समृद्ध विविधता और संस्कृति का सम्मान और पालन करते हुए इन तत्वों को शामिल किया जाना चाहिए। भारत और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकताओं के साथ–साथ इसकी अद्वितीय कलात्मक, भाषाई और ज्ञान परंपराओं के साथ–साथ भारत के युवाओं में इसकी मजबूत नैतिकता के ज्ञान को राष्ट्रीय गौरव, स्वयं–आत्मविश्वास, आत्म–ज्ञान, सहयोग और एकीकरण के उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

नई शिक्षा नीति को लागू करना आवश्यक क्यों है?

मैकाले की शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप हमें अपनी युवा पीढ़ी के साथ कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनमें से कुछ चुनौतियां नीचे सूचीबद्ध हैं।

एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार, 2021 में आत्महत्या से 13,089 छात्रों की मौत हुई, जो 2020 में 12,526 थी। 56.51 प्रतिशत पुरुष थे, जबकि 43.49 प्रतिशत महिलाएं थीं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, भारत में हर घंटे एक छात्र आत्महत्या करता है, लगभग 28 ऐसी आत्महत्याएं हर दिन दर्ज की जाती हैं। लैंसेट के एक अध्ययन के अनुसार, भारत में दुनिया में सबसे अधिक आत्महत्या मृत्यु दर है, जिसमें 15 से 29 वर्ष की आयु के बीच होने वाली वयस्क आत्महत्या मौतों का एक बड़ा हिस्सा है। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि 10 से 17 वर्ष की आयु के करीबन 1.58 करोड़ बच्चे देश में नशे के आदी हैं।

एक गैर–सरकारी संगठन के सर्वेक्षण के अनुसार, उपचार चाहने वाले 63.6 प्रतिशत रोगियों को 15 वर्ष से कम उम्र में नशीली दवाओं से परिचित कराया गया था। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, भारत में नशीली दवाओं और मादक द्रव्यों के सेवन करने वालों में से 13.1 प्रतिशत बीस वर्ष से कम उम्र के हैं। भारत में, बच्चों द्वारा दुरुपयोग की जाने वाली पांच सबसे आम दवाएं हेरोइन, अफीम, शराब, भांग और प्रोपोक्सीफीन हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, 21 प्रतिशत, 3 प्रतिशत और 0.1 प्रतिशत सभी शराब, भांग और अफीम के उपयोगकर्ता अठारह वर्ष से कम आयु के हैं। नशीली दवाओं के उपयोगकर्ताओं के बीच

ISSN No. 2581-3528

एक नया चलन इंजेक्शन के माध्यम से नशीली दवाओं के कॉकटेल का उपयोग होता है, अक्सर एक ही सुई के साथ, जिससे एचआईवी संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है।

10 से 19 साल के हर छह में से एक बच्चा और किशोर अवसाद का शिकार है। कई बच्चे दोस्ती करने और बातचीत करने के लिए आभासी दुनिया और आभासी वास्तविकता की ओर मुड़े हैं। अत्यधिक ऑनलाइन उपस्थिति या स्क्रीन समय से मिजाज, चिड़चिड़ापन, सामाजिक दूरी, सोने और खाने के पैटर्न में बदलाव, ध्यान देने में कठिनाई, ध्यान केंद्रित करने और एकाग्रता के साथ–साथ परिवार या वास्तविक दुनिया से और अधिक अलगाव का कारण बनता है।

अनुसंधान और नवाचार को प्राथमिकता देना क्यों महत्वपूर्ण है? : छात्रों की नवाचार चेतना और उद्यमशीलता की क्षमता को विकसित करने के साथ–साथ छात्रों को सामाजिक स्थिति के अनुकूल बनाने और राष्ट्रीय आर्थिक जरूरतों को पूरा करने में सक्षम बनाने के लिए चीन ने नवाचार और उद्यमिता शिक्षा को सख्ती से आगे बढ़ाया है। रोजगार शिक्षा के विपरीत, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में नवाचार और उद्यमिता शिक्षा का उद्देश्य कॉलेज के छात्रों के नवाचार और उद्यमिता के लिए नींव रखना, कॉलेज के छात्रों की उद्यमिता के अनुपात में वृद्धि करना और चीन के रोजगार के दबाव को कम करना है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों को भी छात्रों की रचनात्मक और उद्यमशीलता की क्षमताओं को विकसित करना चाहिए। इस कारक के परिणाम स्वरूप चीन की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ी है, जबकि खराब शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप भारत का पिछले 75 वर्षों में आर्थिक विकास धीमी गति से हुआ है, इस तथ्य के बावजूद कि हमारे पास एक बड़ा टैलेंट पूल है।

जब छात्रों को नवीन चेतना, सकारात्मक लक्षण, जीवन कौशल विकसित करना और उद्यमशीलता की क्षमता विकसित करनी चाहिए, तो वे एक गलत शिक्षा व्यवस्था के कारण जीवन कौशल और अभिनव चेतना विकसित करने पर कोई जोर दिए बिना नकारात्मकता से भरे जीवन की ओर मुड़ रहे हैं– मैकाले की शिक्षा प्रणाली, जिसे हमने स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी जारी रखा। यह शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से उन मानसिकताओं के विकास के लिए जिम्मेदार है जो कोई नहीं चाहता है। समाज और राष्ट्र के तर्कसंगत और सतत् विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाधा है। उद्यमी बनने के बजाय, अधिकांश युवा जॉब सीकर बन गए हैं, बहुत से युवा छोटे जॉब प्रोफाइल से संतुष्ट हैं जो उनकी शैक्षिक योग्यता से मेल नहीं खाता है।

मैकाले शिक्षा प्रणाली जीवन कौशल के विकास में सहायता नहीं करती है, बल्कि नकारात्मक लक्षणों, एक गुलामी की मानसिकता और चरित्र विकास पर ध्यान देने की कमी को बढ़ावा देती है। नतीजतन, हमारे कई बच्चे ड्रग्स की ओर मुड़ गए हैं, मानसिक बीमारियों से पीड़ित हैं, आत्महत्या कर ली है, हिंसक प्रवृत्तियों के हो गए हैं, और भविष्य के लिए आशा खो चुके हैं।

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य व्यक्तिगत और राष्ट्रीय चरित्र को विकसित करना है, जिसमें अनुसंधान और सकारात्मक मानसिकता, जीवन में उतार–चढ़ाव को प्रभावी ढंग से संभालने के लिए जीवन कौशल, नेतृत्व गुण, एकीकृत मानवता पहलुओं और उद्यमशीलता क्षमताओं को विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया गया है।

उचित इरादे और समर्थन के साथ उसे विकसित करने के लिए प्रत्येक शिक्षार्थी की आंतरिक क्षमता का पता लगाया जाना चाहिए। नई शिक्षा प्रणाली इस बिंदु पर जोर देती है। बचपन से ही एक तार्किक, वैचारिक और तर्क क्षमता आधारित शिक्षा उन्हें आसानी से जेईई, एनईईटी और एनडीए जैसी कठिन परीक्षाओं का सामना करने के लिए तैयार करेगी। छठी कक्षा से शुरू होने वाली प्रायोगिक शिक्षा, साथ ही स्नातक पाठ्यक्रमों और बहु–कौशल विकास के दौरान अनुसंधान और नवाचार पर ध्यान देने से उन्हें महान उद्यमी और बाजार की संभावनाएं तैयार होंगी।

महान संस्कृति और सामाजिक आर्थिक विकास के संरक्षण के लिए स्थानीय भाषाओं पर जोर देना एक शानदार रणनीति है। यदि हम उच्चतम आर्थिक विकास वाले राष्ट्रों को देखें, तो हम देख सकते हैं कि वे अपनी मूल भाषाओं को प्राथमिकता देते हैं। स्थानीय भाषा और सही इतिहास उन्हें इस विश्वास से मुक्त होने में सहायता करेगा कि हम केवल 'सपेरों' वाले देश का प्रतिनिधित्व करते हैं और सामाजिक आर्थिक विकास, विज्ञान और तकनीकी पहलुओं, जीवन और जीवन शक्ति के बारे में ज्ञान के महान इतिहास को महसूस कर पायेंगे।

जब हम 'अमृत काल' में प्रवेश कर रहे हैं और 2047 तक अपने राष्ट्र को 'विश्वगुरु' के रूप में देखना चाहते हैं, तो हमें एक राष्ट्र के रूप में नई शिक्षा नीति को गुणात्मक और प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए सामूहिक और समग्र ध्यान केंद्रित करने के लिए हाथ मिलाने की आवश्यकता है। राजनीतिक और वैचारिक मतभेद हमेशा मौजूद रहेंगे, लेकिन हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों को समाज, राष्ट्र और दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए आवश्यक विकास के स्तर तक उठाने के लिए उन्हें एक तरफ रखना होगा।

(लेखक ब्लॉगर एवं शिक्षाविद हैं)

ISSN No. 2581-3528

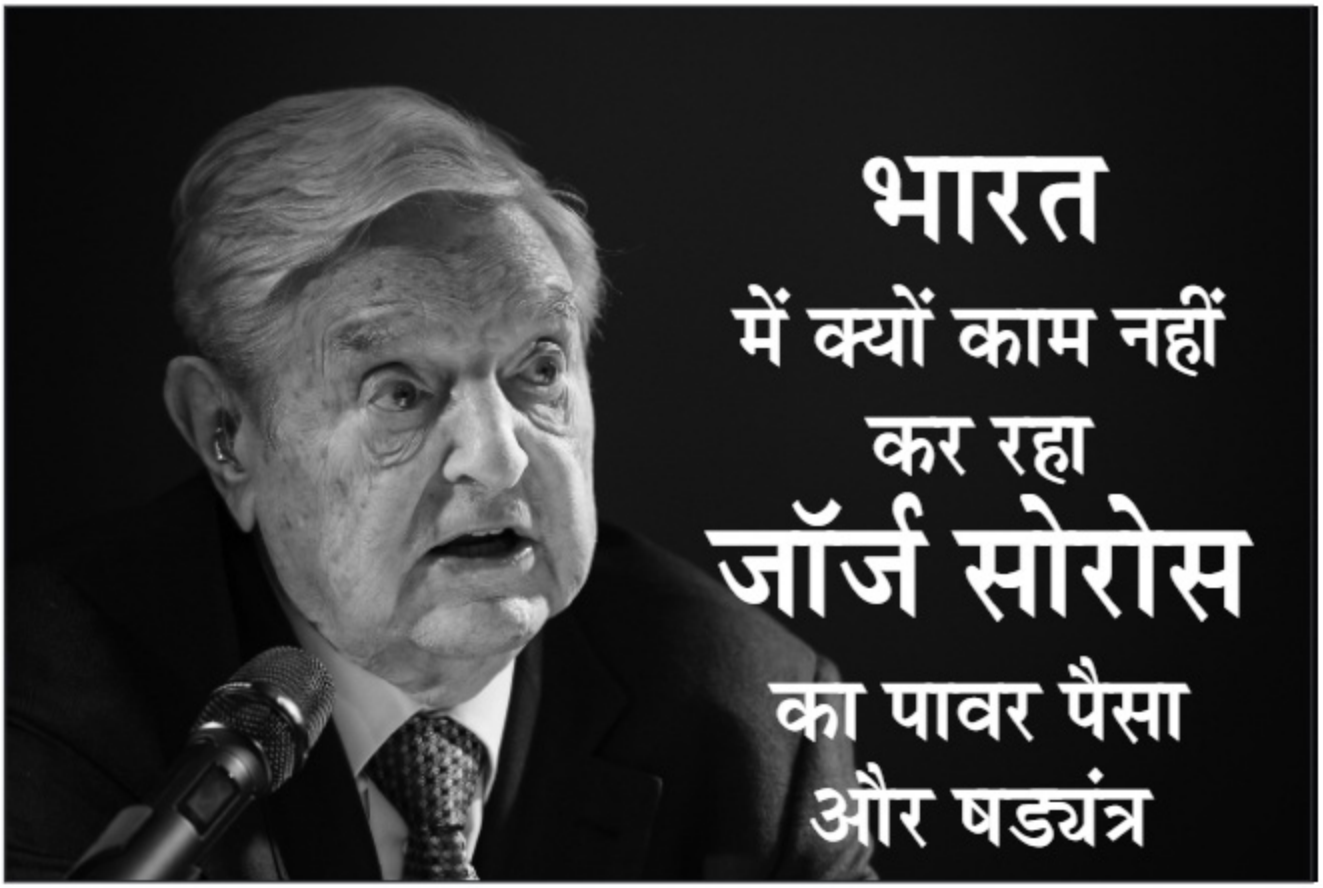

भारत में क्यों काम नहीं कर रहा जॉर्ज सोरोस का पावर पैसा और षड्यंत्र

बिभाकर झा

सत्ता में बने रहने के लिए और सत्ता से बाहर होने पर सत्ता में वापसी के लिए प्रमुख विपक्षी दल हमेशा से ही षड्यंत्र करते आये हैं। इसके लिए आजकल जो तकनीकी और आर्थिक हथकण्डे अपनाए जाते हैं उन्हें बोलचाल की भाषा में टूलकिट कहा जाता है। इस टूलकिट का प्रयोग कभी विदेश से तो कभी देश के अन्दर से संचालित किया जाता रहा है। भारत विरोधी टूलकिट गैंग एक बार फिर से एक्टिव होकर भारत के खिलाफ साजिश रच रहा है और इस बार अमेरिकी अरबपति बिजनेस मेन जॉर्ज सोरोस टूलकिट के नए सूत्रधार बने हैं। अपनी टूलकिट के अंतर्गत जॉर्ज सोरोस ने पीएम मोदी पर निशाना साधते हुए कहा है कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है लेकिन स्वयं पीएम मोदी अलोकतांत्रिक हैं। मोदी के तेजी से बड़ा नेता बनने के पीछे अहम वजह मुस्लिमों के साथ की गई हिंसा है। जॉर्ज सोरोस के इस बयान के बाद भारत के विदेश मन्त्री एस जयशंकर ने कहा कि सोरोस पुराने विचारों वाले व्यक्ति हैं और न्यूयॉर्क में बैठकर वे अभी भी सोचते हैं कि उनके विचारों के अनुसार ही दुनिया चले। उन्होंने कहा कि ऐसे लोग अपने नैरेटिव के लिए अपने संसाधनों का उपयोग करते हैं जो खतरनाक हैं।

जॉर्ज सोरोस के इस बयान से पीएम मोदी और भारत के प्रति उनकी नफरत और घृणा को समझा जा सकता है। वैसे तो सोरोस भारत के खिलाफ लंबे समय से एजेंडा चलाते रहे हैं। सोरोस को न केवल नरेंद्र मोदी बल्कि चीन, ब्लादिमीर पुतिन, अमेरिका पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जैसे राष्ट्रवादी नेता पसंद नहीं हैं। उनके अनुसार डोनाल्ड ट्रंप ठग और पीएम मोदी तानाशाह है। इसलिए इन जैसे'राष्ट्रवादी' सोच के नेताओं से लड़ने के लिए जॉर्ज सोरोस ने लगभग 100 अरब डॉलर की फंड की स्थापना की है। इन फंड का इस्तेमाल अक्सर वह इन लोगों के खिलाफ प्रोपगेंडा फैलाने के लिए करते हैं।

सच तो ये है कि पीएम मोदी के खिलाफ जॉर्ज सोरोस का हालिया बयान एक प्रकार की खीज है क्योंकि दशकों से वे भारत विरोधी प्रोपगैंडा को अपनी अकूत संपत्ति और पैसे की फंडिग के जरिए फैलाते रहे हैं। जम्मू–कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने और नागरिकता संशोधन कानून (CAA) का भी इस टूलकिट द्वारा खुलकर विरोध किया गया था। दरअसल जॉर्ज सोरोस जैसे लोग पैसे के दम पर दुनिया भर के देशों में सरकारों को अस्थिर करके परोक्ष रूप से सत्ता का संचालन करने की मंशा रखते हैं और उससे लाभ कमाते हैं। इसके लिए उनके पास एक मैकेनिज्म और इकोसिस्टम है जिसके माध्यम से वे देश

ISSN No. 2581-3528

विरोधी शक्तियों को पैसे के दम पर एक्टिव करते हैं दंगा–फसाद करवाते हैं और चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकारों को अस्थिर कर उस देश की सरकार को अपने मनमुताबिक कार्य करने के लिए बाध्य करते हैं। अफसोस है कि पीएम मोदी के नेतृत्व वाले भारत में वह ऐसा करने में असफल रहे हैं। वैसे साजिशें रचने में माहिर 92 वर्षीय जॉर्ज सोरोस का षडयंत्रकारी इतिहास बहुत पुराना है। आपको जानकर हैरानी होगी कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब नाजियों ने हंगरी पर आक्रमण किया, तो नाजियों से बचने के लिए सोरोस ने खुद को ईसाई बताया। नाजियों को उस पर कोई संदेह न हो इसलिए उन्होंने अपनी जान पहचान के कई यहूदियों का पता नाजियों को बता दिया। बाद में नाजियों ने इन यहूदियों की हत्या कर दी और इन सबके बीच जॉर्ज सोरोस वहां से पलायन करने में कामयाब रहे। अपने एक साक्षात्कार में उन्होंने स्वीकार किया कि ये मेरे दृष्टिकोण से धोखा नहीं मेरे लिए एक अवसर था। इतना ही नहीं सोरोस ने साल 1994 में खुलासा किया था कि उन्होंने आत्महत्या करने में अपनी माँ की मदद की थी। जाहिर है इससे आपको सोरोस की कुंठित मानसिकता का अंदाजा लग गया होगा कि जो अपने स्वार्थ के लिए निर्दोष लोगों की हत्या करवाने से भी नहीं चूकता है। भले ही वह उनकी माँ ही क्यों न हो। सवाल है कि किसी दूर देश में बैठे जॉर्ज सोरोस आखिर अपने अपने खतरनाक साजिशों को अंजाम कैसे देते हैं।

दरअसल सोरोस ने अपने साजिशों को अंजाम देने के लिए वर्ष 1993 में ओपन सोसाइटी फाउण्डेशन नाम से एक एनजीओं की स्थापना की थी। कहने को तो यह गरीब और कमजोर लोगों की मदद के लिए बनाई गई थी। लेकिन इसका असली मकसद किसी भी देश के विद्रोही गुट को धन का लालच देकर वहां की सरकार को अस्थिर करना था। भारत में भी जॉर्ज सोरोस के इस एनजीओं का कनेक्शन पीएफआई, अर्बन नक्सल, क्रिश्चियन मिशनरीज, एण्टी–इण्डिया इकोसिस्टम से है। सबसे बड़ी बात यह है कि इस NGO का संबंध देश की सबसे प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस से भी है। जिनके जरिये ये अपनी साजिशों को अंजाम देते थे। गैरकानूनी तरीके से भारत में फंडिंग करने के चलते वर्ष 2016 में भारत सरकार ने इनकी NGO को वॉचलिस्ट में डाल दिया था, तब से ये अधिक बौखला गए हैं। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि 11 अक्टूबर 2022 को राहुल गांधी के साथ भारत जोड़ो यात्रा में शामिल सलील शेट्टी भारत में इसी NGO के वाइस प्रसीडेंट हैं। इससे पहले वह एमनेस्टी इंटरनेशनल के जनरल सेक्रेटरी भी रह चुके हैं। दोनों ही एनजीओं पर गैरकानूनी गतिविधियों को चलाने के आरोप में कार्रवाई हो चुकी है। इसके अलावा इस टूलकिट से जुड़ी फ्रांस की एक सिविल सोसायटी ग्रुप शेरपा एसोसिएशन भी है। आपको बता दें कि यह वही ग्रुप है जिसने सबसे पहले राफेल डील में भष्ट्राचार के आरोप लगाए थे और हो हल्ला मचाया था। कांग्रेस ने इसी को मुद्दा बनाकर दुष्प्रचार किया था और राहुल गांधी ने चौकीदार–चोर का विफल नारा दिया था।

खास बात यह है कि जब भी भारत में चुनाव होते है ये सभी NGO उससे एक वर्ष पूर्व एक्टिव हो जाते हैं और मोदी सरकार और देश की छवि को खराब करने का प्रयास करते हैं। देश की छवि खराब करने और देश की आन्तरिक सुरक्षा से खिलवाड़ करने के लिए एक खास तरह का टुकड़े–टुकड़े गैंग देश के भीतर सक्रिय हो जाता है। इन सभी संगठनों को जॉर्ज सोरोस की ओपन सोसाइटी फाउण्डेशन की ओर से फण्ड दिया जाता है। आपको याद दिला दें कि 24 जनवरी 2020 को जॉर्ज सोरोस ने कहा था कि CAA से मुसलमानों की नागरिकता छीनी जा रही है, सरकार से लड़ने के लिए अपने NGO के माध्यम से हम 8 हजार 200 करोड़ की मदद देंगे। सोरोस की इस घोषणा के बाद ही 25 जनवरी 2020 को शरजील इमाम का असम को भारत से अलग करने वाला बयान आता है। 27 जनवरी 2020 को ईडी ने बताया कि देश विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए PFI के लोगों को लाखों रुपये का फण्ड उपलब्ध कराया गया था। यही कारण था कि भारत सरकार ने पिछले वर्ष देश में PFI को बैन कर दिया था। वर्ष 2008 में जॉर्ज सोरोस की कम्पनी और मशहूर कम्पनी ओमिदयार नेटवर्क के बीच भारत में निवेश को लेकर डील हुई थी जिसका छद्म उद्देश्य था भारत में नौकरी के अवसर को बढ़ाना, बाद में पता चला कि इस निवेश का उपयोग रोजगार के लिए नहीं बल्कि भारत–विरोधी गतिविधियों के लिए हो रहा है। जॉर्ज सोरोस से जुड़ी ओमिदयार नेटवर्क इण्डिया ने आज के समय में भारतीय NGO और न्यूज वेबसाइटों में भी 8 हजार करोड़ का निवेश किया है। इतना ही नहीं फ्रांस के एनजीओ फॉरबिडन स्टोरीज को भी सोरोज फण्ड करता है जो प्रेस फ्री इण्डेक्स जारी करता है। अपने इण्डेक्स में जान बूझकर वह भारत को नीचे रखता है। जिससे देश और दुनिया में भारत की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सके। स्वीडन में वीडेन नाम से एक संस्था चलती है जो डेमोक्रेसी रेटिंग जारी करती है इसको भी सोरोस की संस्था फण्डिग करती है। इसका परिणाम ये हुआ कि वर्ष 2022 में भारत को दुनिया के सबसे ज्यादा 10 तानाशाही वाले देशों में नॉमिनेट किया गया जिसके बाद यहां के विपक्षी दलों ने सरकार पर हमला बोल दिया था। वहीं द वायर ने इस पर पूरी रिपोर्ट जारी की थी जाहिर है कि द वायर को भी सोरोस की संस्था ही फण्डिग करती है। तमाम फंडिंग के बाद भी देश को अस्थिर करने वाले लोग पीएम मोदी के नेतृत्व में ऐसा करने में विफल हो रहे हैं वे चाहकर भी न तो देश में दंगा फसाद करवा पा रहे हैं और न ही सरकार को अस्थिर कर पा रहे हैं। दूसरी तरफ तमाम हथकंडे अपनाने के बाद भी पीएम मोदी का यश और स्वीकार्यता देश–विदेश में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है साथ ही सोशल मीडिया के प्रसार के कारण ऐसे साजिशकर्ताओं की पोल–पट्टी भी खुल चुकी है।

गौरतलब है कि इनके कुकृत्यों के कारण जॉर्ज सोरोस पर कई देशों ने प्रतिबन्ध लगा रखे हैं तो वहीं अमेरिका इसे सबसे खतरनाक व्यक्ति मानता है, जो दुनिया भर के देशों में अपनी अकूत धन–दौलत के दम पर परोक्ष रूप से हिंसा और उत्पात मचाने का काम करते हैं।

(लेखक पत्रकार हैं)

ISSN No. 2581-3528

बदनाम करने की विदेशी साजिश

पिछले कुछ समय से भारत विश्व पटल पर लगातर वृद्धि कर रहा है। अपने विकास व अन्य कार्यों के कारण सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। हर क्षेत्र में भारत के बढ़ते कदम कहीं न कहीं भारत को पुराने गौरव की तरफ ले जा रहे है। दुनिया के कई बड़े विद्वान कहने भी लगे है कि भारत विश्व की सबसे बड़ी महाशक्ति के रूप में स्थापित होने की ओर अग्रसार है। परन्तु भारत के बढ़ते कदम कुछ देशों को पसंद नही आ रहे। उनमें से एक देश है अमेरिका। अमेरिका लगातर भारत के बढ़ते कदमों को रोकने के लिये नए–नए प्रयोग कर रहा है। अभी अमेरिका के सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एन्ड प्रिवेंशन (सीडीसी) और गांबिया के स्वास्थ्य अधिकारियों ने गांबिया में हुई बच्चों की मौत का जिम्मेदार भारत में निर्मित कप सिरप को माना है। उनके अनुसार भारत में निर्मित कप सिरप के सेवन करने से बच्चों की मौत हुई है। जबकि भारत सरकार ने कहा कि हमारे कप सिरप में किसी प्रकार की विषाक्तता नही है। केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री भारती प्रवीण पवार ने लोकसभा में कहा है कि जाँच के बाद खांसी की दवा के नमूने गुणवत्तापूर्ण पाए गए हैं। अमेरिका की ये सोची समझी साजिश है कि भारत की विश्व पटल पर छवि धूमिल हो। इसमें केवल विदेश के लोग शामिल नही है बल्कि भारत के भी कुछ लोग विदेश में जाकर भारत को बदनाम करने की कोशिश करते हैं। उनमें से एक है कांग्रेस नेता राहुल गांधी। ये जब भी विदेश जाते हैं वहाँ जाकर कोई न कोई ऐसा बयान जरूर देते है। जिससे भारत की बदनामी हो। अभी इंग्लैंड की केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के एक कार्यक्रम में राहुल गांधी ने भारत सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि भारत के प्रधानमंत्री लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर कर रहे हैं। उन्होंने भारत सरकार पर जासूसी कराने का आरोप भी लगाया। वैसे राहुल ने ये पहली बार नही किया है वो जब भी विदेश जाते हैं कोई न कोई ऐसा बयान जरूर देते है जिससे विश्व स्तर पर भारत की छवि पर असर पड़े। विदेश में दिए उनके वक्तव्यों से ऐसा लगता है कि उनसे कोई विदेशी ताकत है जो उनसे ये सब कहलवाती है। अभी पीछे भारतीय उद्योगपति गौतम अडानी को लेकर भी अमेरिकी उद्योगपति जॉर्ज सोरोस ने अनाप सनाप टिप्पणी करके गौतम अडानी को विश्व के पांचवे सबसे अमीर व्यक्ति के स्थान से इक्कीसवें स्थान पर पहुँचा दिया है। जॉर्ज सोरोस ने जो बात अडानी के लिये कही थी वो निराधार थी। बस उनके कहने का हेतु अडानी समूह को कमजोर करके भारत के बढ़ते कदमो को रोकना ही था। जॉर्ज सोरोस ने अडानी के नाम का सहारा लेकर भारत के प्रधानमंत्री पर भी अजीब टिप्पणी करते हुए कहा था कि प्रधानमंत्री मोदी और अडानी के सम्बंध मधुर है इसलिये इस विषय पर वो चुप है। उनको इस मुद्दे पर संसद व विदेशी निवेशकों को जबाव देना ही होगा। जबकि अडानी समूह व भारत सरकार दोनों ने जॉर्ज सोरोस के इस आरोप को नकारा था। परन्तु जिस योजना को लेकर सोरोस ने ये बयानबाजी की थी। उसमें तो उनको सफलता मिल ही गई। विश्व स्तर पर सबसे ज्यादा सफलताओं को प्राप्त करते हुए अडानी भारत के नाम को आगे बढ़ा रहे थे। परन्तु सोरोस के बयान ने उनको काफी पीछे कर दिया है। जिससे देश की छवि पर भी असर पड़ा है। प्राचीन समय से ही भारत को बदनाम करने के निरन्तर प्रयास चलते आ रहे है। परन्तु वर्तमान समय मे भारत की बढ़ती गति से लगता है कि इन प्रयासों के बावजूद भारत किसी से अब रुकने वाला नही है। अभी माइक्रोसॉफ्ट के संस्थापक बिल गेट्स ने प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकत करते हुए कहा है कि स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन व अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत की प्रगति सराहनीय है। उन्होंने ये भी कहा कि आज जब दुनिया के सामने बहुत सारी चुनोतियाँ है, भारत जैसे प्रगतिशील व रचनात्मक जगह पर यात्रा करके बहुत प्रेरणा मिली है। भारत सरकार को भारत की इस प्रगतिशील यात्रा में बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है क्योंकि हमेशा से संघर्षशील रहे भारत के लिये आज भी संघर्ष कम नही हुए हैं। बस उनके रूप व स्वरूप बदले हैं। **(ललित शंकर गाजियाबाद)**

ISSN No. 2581-3528

हीरे मोती उगले मेरे देश की भूमि

आशीष कुमार

भारतीय वैदिक साहित्य में लिखा हुआ है यदि राजा परोपकारी हो तो धरती प्रजा के कल्याण के लिए सोना चांदी उगलने लगती है। प्रकृति भारत पर मेहरबान है। आधुनिक युग की गति के लिए परम आवश्यक बताया जा रहा तत्व लीथियम के विशाल भंडार जम्मू कश्मीर में मिले हैं, जिसे वाइट गोल्ड भी कहा जाता है। उड़ीसा में सोने के विशाल भंडार मिलने की खबरें आ रही हैं। इन समाचारों को सुनकर प्रत्येक भारतीय का मन प्रसन्न और गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

जम्मू कश्मीर में लिथियम भंडार की क्षमता 59 लाख टन आंकी जा रही है। भारत में पहली बार इतनी बड़ी मात्रा में लीथियम मिला है। वैज्ञानिकों द्वारा अनुमान लगाया जा रहा है कि यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा लिथियम भंडार हो सकता है। इतनी भारी मात्रा में लिथियम मिलने से भारत की निर्भरता दूसरे देशों से खत्म हो जाएगी।

जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने 59 लाख टन लिथियम की पहचान जम्मू–कश्मीर के रियासी में की हैं। लीथियम एक रेयर एलिमेंट है जिसका इस्तेमाल रिचार्जेबल बैटरी बनाने में किया जाता है। चाहे मोबाइल फोन हो या सौर पैनल, हर जगह महत्वपूर्ण खनिजों की जरूरत होती है। इसमें लिथियम एक जरूरी खनिज है। लैपटॉप, मोबाइल बनाने में लिथियम एक जरूरी घटक है। इसका इस्तेमाल मॉन्यूक्लियर रिएक्शन में भी किया जाता है। इसका प्रयोग एल्युमीनियम और मैग्नीशियम के साथ मिश्र धातु बनाने में भी किया जाता है, साथ ही मिश्र धातुओं की कैपेसिटी बढ़ाने में भी किया जाता है। मैग्नीशियम–लिथियम मिश्र धातु का इस्तेमाल कवच बनाने में किया जाता है। एल्युमीनियम–लिथियम मिश्र धातु का इस्तेमाल साइकिलों के फ्रेम, एयरक्राफ्ट और हाई–स्पीड ट्रेनों में किया जाता है। मूड स्विंग और बाइपोलर डिसऑर्डर जैसी बीमारियों के इलाज में भी लिथियम का इस्तेमाल किया जाता है.

प्रौद्योगिकी के विकास के लिए लिथियम एक जरूरी एलिमेंट है। भारत सरकार का मानना है कि लिथियम मिलना उभरती प्रौद्योगिकी के लिए मील का पत्थर साबित होगा। ऐसे में इसके भंडार का पता लगाना भारत को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बड़ा कदम है।

लिथियम का सबसे बड़ा भंडार चिली में 93 लाख टन का है। ऑस्ट्रेलिया में 63 लाख टन, अर्जेंटीना में 27 लाख टन और चीन में 20 लाख टन लिथियम उत्पाद किया जाता है। भारत अपनी जरूरत का 96 फीसदी लिथियम आयात करता है। भारत चीन से सबसे ज्यादा लिथियम आयात करता है, जो पूरे आयात का 80 प्रतिशत है।

साल 2020–21 के बीच भारत ने लिथियम ऑयन बैटरी के आयात पर 8,984 करोड़ रुपये खर्च किए थे। वहीं साल 2021–22 में लिथियम के आयात पर 13,838 करोड़ रुपये खर्च किए थे। भारत इस तरह के धातु के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए अर्जेंटीना, चिली, ऑस्ट्रेलिया और बोलिविया की खदानों में अपनी हिस्सेदारी खरीदने पर भी काम कर रहा है।

फिलहाल भारत 96 प्रतिशत लिथियम का आयात अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, चिली, चीन, अर्जेंटीना और बोलीविया से करता है। इतने बड़े पैमाने पर लिथियम के निर्यात से भारत की काफी विदेशी मुद्रा खर्च होती है। लिथियम भंडार भारत में मिलने से भारत का विदेशी मुद्रा खर्च होने से तो बचेगी साथ ही भारत लिथियम का निर्यात कर अपना राजस्व भी बढ़ा सकेगा।

मौजूदा समय में 1 टन लिथियम की कीमत करीब 57.36 लाख रुपये है। भारत में 59 लाख टन लिथियम का भंडार मिला है, ऐसे में आज के समय इसकी कीमत लगभग 3,384 अरब रुपये होगी। हालांकि कमोडिटी मार्केट हर दिन मेटल की कीमत तय करता है।

अगर भारत अपने भंडार से जरूरत के मुताबिक लिथियम का उत्पादन कर लेता है तो जाहिर है कि बैटरियों के दाम कम होंगे। साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों के दामों में भी कमी आ सकती है। दुनिया भर में इस्तेमाल होने वाली 10 लिथियम बैटरियों में से लगभग चार का इस्तेमाल चीन में हो रहा है। लिथियम की इंपोर्टेड बैटरियों का 77 प्रतिशत उत्पादन भी चीन में होता है। अब लिथियम मिलने पर अगर भारत ने लिथियम बैटरियां बनाना शुरू कर दिया तो चीन को बड़ा नुकसान होगा।

भविष्य में इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग बढ़ने वाली है। इलेक्ट्रिक वाहनों में लिथिमय आयन बैटरियों का ही इस्तेमाल किया जाता है। ऐसे में पूरी दुनिया को लिथियम बैटरियों से बड़ी उम्मीदें हैं। अगर भारत जरूरत के जितना लिथियम उत्पाद कर लेता है और दूसरे देशों में निर्यात करने लगे तो पूरी दुनिया में बढ़ रहा प्रदुषण और जलवायु परिवर्तन को काबू किया जा सकता है।

भारत ने साल 2070 तक अपने उत्सर्जन को पूरी तरह से इन्वॉरमेंट फ्रेंडली करने का संकल्प लिया है। इसके लिए इलेक्ट्रिक वाहन बैटरी में लिथियम का एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में होना जरूरी है। सेंट्रल इलेक्ट्रिसिटी अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मुताबिक देश को साल 2030 तक 27 GW ग्रिड–स्केल बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम की जरूरत होगी, जिसके लिये भारी मात्रा में लिथियम की जरूरत होगी। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी यानी IEA का अनुमान है कि साल 2025 तक दुनिया को लिथियम की कमी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में भारत में मिला लिथियम इस कमी को भी दूर करेगा।

(लेखक मीडियाविद हैं)

ISSN No. 2581-3528

हारिए मगर जीतने के लिए!

डॉ. ऋतु दुबे तिवारी

अमेरिकी कवि जॉर्ज एडवर्ड वुडबेरी ने एक बार कहा था, 'हार सबसे बड़ी असफलता नहीं है। कोशिश नहीं करना असली विफलता है।' जब आप वास्तव में हार जाते हैं, तभी आप कोशिश करना बंद कर देते हैं। जब आप हारते हैं, तो डिमोटिवेट महसूस करना और निराश होना आसान होता है। यही कारण है कि, आपको अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहने की आवश्यकता है, और उठकर फिर से प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमने बचपन से सुना है फर्स्ट आओ, जीतो, आगे बढ़ते रहो, रेस में अव्वल रहो। जैसे जीतना ही जीवन ध्येय और मूल भाव है। सोचिए अगर प्रकृति ने सिर्फ जीत को महत्व दिया होता तो हार का अस्तित्व क्यों है? बिना महत्व के तो प्रकृति घास के तिनके को भी अनावश्यक घोषित कर देती है, मिटा देती है। जैसे जीवन के साथ मृत्यु अकाट्य सत्य है वैसे ही जीत के साथ हार भी अनिवार्य स्थिति है।

आज तरक्की और प्रगति के बीच के अंतर को हम भुला चुके हैं। तरक्की मतलब बड़े, भव्य, आलीशान घर, ब्रांडेड कपड़े, महंगी एसेसरीज, गैजेट और नए टॉप मॉडल की गाड़ियां। यही सफलता की आम धारणा बन चुकी है ज्यादातर लोग इसके इतर सोच ही नहीं पा रहे। बहुत देर से एहसास होता है कि हम किसी गलत होड़ में भाग रहे हैं और जाने–अंजाने अपने बच्चों को भी इसी दौड़ का हिस्सा बना बैठे हैं।

बेस्ट होने या बेस्ट दिखने का दबाव लगभग हर एक बच्चे के ऊपर है। किसी के ऊपर थोड़ा कम, किसी के ऊपर थोड़ा ज्यादा। लगता है कि हम सारे बच्चों को श्रेणियों में बांटने के लिए ही तत्पर बैठे हैं सर्वश्रेष्ठ बच्चे, औसत बच्चे और निम्न प्रदर्शन करने वाले बच्चे क्योंकि यही पैमाना समाज के बड़े तबके द्वारा शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर तय कर लिया जा रहा है।

टाइम्स ऑफ इंडिया में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार लगभग 35 प्रतिशत छात्रों ने स्वीकार किया कि वह बेहतर अकादमिक प्रदर्शन के दवाब में रहते हैं और 37 प्रतिशत छात्रों में एंजायटी पाई गई।

कक्षा 9 से 12 के बच्चों के बीच इसी डर और तनाव को निकालने के लिए प्रधानमंत्री ने परीक्षा पर चर्चा की शुरुआत की। बोर्ड परीक्षा का महत्व हर छात्र जानता है लेकिन डर, तनाव और दवाब में छात्र का आत्मविश्वास लगभग हिल जाता है और उसके द्वारा किए गए सारे प्रयत्नों पर पानी फिर जाता है। परीक्षा के नतीजे उनके जीवन को बहुत हद तक प्रभावित करते हैं और कम अंकों की वजह से अपमानित महसूस करते हताश, दुखी छात्र कभी–कभी आत्महत्या जैसे भयावह निर्णय ले लेते हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार 2014 से 2020 के बीच 12500 बच्चों ने आत्महत्या की, इसी रिसर्च के अनुसार भारत में लगभग हर घंटे एक छात्र आत्महत्या करता है। जिसका एक महत्वपूर्ण कारण खराब परीक्षा परिणाम भी है।

शिक्षा हर व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है और इससे आगे के जीवन का निर्धारण होता है यानी जीवन में आप कितने सफल हैं कितने सशक्त हैं और किस हिसाब से समृद्ध हैं काफी कुछ शिक्षा के प्रभाव का नतीजा होता है परंतु अभिभावकों, शिक्षकों अथवा समाज की विभिन्न अपेक्षाओं के दबाव में छात्रों द्वारा परीक्षाओं को जीवन–मरण का प्रश्न बना लेना अपने आप में एक गंभीर और ध्यान देने वाली बात है। बेहतर प्रदर्शन तभी हो सकता है जब हम अपना मन शांत रखते हुए जो कुछ भी पढ़ा हुआ है उसे बेहतर तरीके से प्रदर्शित करने और लिखने पर ध्यान देते हैं।

ऐसी स्थिति में शिक्षकों का काम बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। हमें समझना होगा कि आज के छात्रों के जीवन की चुनौतियां बहुत अलग हो चुकी हैं। कोरोना काल के बाद से जो अलग–अलग तरीके से ध्यान भटकाने के साधन उन्हें उपलब्ध हो चुके हैं उससे कहना गलत नहीं होगा कि काफी समय छात्र–छात्राओं का स्क्रीन के सामने गुजरता है जिसमें प्रोडक्टिव समय कम होता है। इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की लत पढ़ाई पर फोकस करने में एक बड़ी बाधा सिद्ध हो रही है।

भारत में लगभग हर दिन लोग 6 घंटे का समय स्क्रीन पर बिताते हैं यह चिंताजनक है क्योंकि इससे बहुत समय व

ISSN No. 2581-3528

ऊर्जा खर्च होती है जिसका प्रयोग हम कुछ अच्छे, सकारात्मक कार्यों में भी कर सकते हैं। यह जरूरी है कि हम सब कम से कम हफ्ते में एक दिन गैजेट फ्री या गैजेट फास्टिंग की तरफ भी ध्यान दें। इस व्यापक समस्या से स्कूल और अभिभावक दोनों ही संघर्षरत हैं इससे ना सिर्फ स्कूल का परफॉर्मेंस बल्कि बच्चों का पारिवारिक और सामाजिक जीवन भी प्रभावित हो रहा है। ऐसी स्थिति में यह ध्यान रखना जरूरी है किस तरह से शिक्षक एक पुल की तरह माता–पिता और छात्रों के मध्य अपनी गंभीर भूमिका का निर्वाह करें। छात्रों को पूरे मनोयोग से उनकी रुचि के अनुसार धैर्य और मेहनत करने की क्षमता को बढ़ाने का प्रयास करना होगा ताकि ज्यादा से ज्यादा समय परीक्षा की तैयारी में ईमानदारी और मेहनत से लगा सकें। ध्यान देने वाली बात यह है कि उनका कंप्टिशन खुद से है सारे प्रयास खुद की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए है।

भारत में शुरू किया गया परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम विश्व में एक ऐसा विशिष्ट प्रयास है जिसमें इतने बड़े लोकतंत्र का प्रधानमंत्री छात्रों की परीक्षा जैसे विषय पर गंभीरता से बात करता है, जुड़ा हुआ है। प्रधानमंत्री की इस पहल के बाद परीक्षा और छात्र छात्राओं के प्रश्नों को सभी वर्गों ने गंभीरता से लिया है चाहे वह अभिभावक हों या शिक्षक।

जैसे–जैसे बोर्ड परीक्षा और उसके रिजल्ट का मौसम करीब आता है एक अजीब सी बेचैनी माहौल में तारी होने लगती है। आज भी भारतीय परिवारों में बोर्ड के नंबर बच्चों के अलावा मां–बाप के लिए भी सफलता का एक पैमाना है।

ऐसे में एग्जाम फोबिया कोई काल्पनिक धारणा नहीं है। परीक्षा हर उम्र में घबराहट और बेचैनी निश्चित तौर पर पैदा करती है। मनोवैज्ञानिक भावनात्मक और शारीरिक दृष्टि से यह गहरा प्रभाव डालती है।

ऐसी स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण चीज है कि जब दिमाग दबाव में आता है तो हमारे शरीर की ऊर्जा उस तनाव से निपटने में लग जाती है और सीखने की पूरी प्रक्रिया बाधित हो जाती है। ऐसी स्थिति में यह जरूरी है कि हम अपनी उस सोच में व्यापक बदलाव लाएं जिसमें छात्र के नंबर और ग्रेड उसकी पूरी प्रतिभा, पूरे व्यक्तित्व को तौलने का काम करती है।

यह जरूरी है कि एक व्यापक बदलाव समाज, परिवार और शैक्षणिक संस्थानों में भी हो जिसमें बच्चों को सिर्फ नंबर लाने की मशीन ना समझा जाए बल्कि उनके एकेडमिक या एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज को भी बराबरी से महत्व दिया जाए।

नई शिक्षा नीति में स्वरोजगार और स्किल डेवलपमेंट के लिए प्रयास किए जा रहे हैं इन प्रयासों को जमीनी हकीकत से जोड़ते हुए छात्रों को प्रशिक्षित करना जरूरी है।

छात्रों में आपस में तुलना करना एक बहुत बड़ी भूल है क्योंकि ईश्वर ने मानवीय क्षमता हर व्यक्ति में अलग–अलग दी है। जरूरी है मां–बाप या शिक्षक होने के नाते हम उनकी क्षमताओं को उदार हृदय समझें और निखारने के लिए सतत् प्रयास व सहयोग दें।

आवश्यक है कि हम अपने बच्चों को श्रम का सम्मान करना सिखाए। बताएं कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता बल्कि काम को जिम्मेदारी, लगन और सूझबूझ से करने पर वह काम बड़ा हो जाता है और बड़े काम को भी लापरवाही और गैर जिम्मेदारी से करने पर वह काम अर्थहीन हो जाता है। समाज के प्रति अपनी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए अपने शारीरिक और मानसिक श्रम एवं योग्यताओं का प्रयोग करना सदैव सभी के लिए शुभ होता है। बच्चों को सिखाएं कि जीवन का एकमात्र उद्देश्य धन कमाना नहीं है। इसके अतिरिक्त बहुत सारी चीजें अर्जित करना है जिसमें आत्मिक शांति, सम्मान उपयोगिता और सहयोगिता शामिल है।

किसी को भी जज करने के लिए उसके परीक्षा परिणाम को आधार मान लेना उसकी संपूर्ण प्रतिभा और व्यक्तित्व के साथ अन्याय है। आज के समय में जब एंटरप्रेन्योरशिप व स्वरोजगार को इतना बढ़ावा दिया जा रहा है तो ऐसे में सिर्फ नौकरी पाना करियर का उद्देश्य किसी भी

ISSN No. 2581-3528

तरीके से तर्क सम्मत और भविषोन्मुखी निर्णय नहीं हो सकता। हम यह ध्यान दें कि हमारे आने वाली पीढ़ी को हमें एक नए सिरे से करियर का अर्थ समझाना होगा जिसमें संतुलन सबसे आवश्यक तत्व है। यह जरूरी है कि आर्थिक दृष्टि से मजबूत होने के साथ–साथ शारीरिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और मानसिक रूप से भी छात्र मजबूत बने, संतुलित रहे। यही एकमात्र तरीका है जिससे हम उन्हें एक बेहतर जीवन की तरफ अग्रसर कर सकते हैं। यह न सिर्फ परिवार बल्कि समाज और देश की भी जिम्मेदारी है कि हम आने वाले समय के लिए अपनी नई पीढ़ी को तैयार कर सके और इसके लिए वर्तमान पीढ़ी को अपने सोच–विचार और क्रियान्वयन में मूलभूत परिवर्तन करना आवश्यक है। समाज और शिक्षा का ढांचा इस तरह से बदला व स्वीकार किया जाए कि रोजगार के कई अवसर स्वनिर्मित भी किए जा सके। इसके लिए बहुत जरूरी है कि बोर्ड परीक्षाओं का भय बच्चों के मन से निकाला जाए बल्कि उन्हें बेहतर और व्यवस्थित तरीके से अपनी ऊर्जा को एक लक्ष्य के साथ लगाने के लिए प्रेरित किया जाए। यह शिक्षा को रचनात्मक, समावेशी और सार्वभौमिक बनाने से ही संभव है।

परीक्षा पर चर्चा में प्रधानमंत्री ने अभिभावकों एवं शिक्षकों से मुखातिब होते हुए कहा कि बच्चों के स्वभाव को जानने की आवश्यकता है, उन्हें जीवन की भिन्न–भिन्न चीजों से जुड़ने देना चाहिए, लोगों से बातें करना चाहिए ना कि उन्हें अपने दायरे में बंद कर देना चाहिए। यह ध्यान देना जरूरी है कि उन्हें कोई खराब आदत न लगे। इसकी जिम्मेदारी शिक्षक और माता–पिता दोनों की है। इसके अलावा उन्होंने एक मूल्यवान बात कही कि भारत एक विविधता का देश है ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि बच्चों को उनकी संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान हो, उस पर गर्व हो। प्रयास किया जाए कि उनके रिजल्ट की वजह से उनके मन में नकारात्मकता की भावना अगर आती है तो इस सच्चाई से उनको मुकाबला करने के लिए मजबूत बनाया जाए। तनाव किसी भी परिस्थिति में, किसी भी चीज का कोई हल

नहीं है और कोई भी परीक्षा जीवन का अंत नहीं हो सकती। ऐसे में यह पूरे परिवार, समाज और देश की जिम्मेदारी है कि बच्चों को परीक्षा के तनाव से मुक्त करने के साथ–साथ खराब रिजल्ट से निपटने के लिए भी तैयार किया जाए। उन्हें आलोचनाओं का मुकाबला करना सीखना जरूरी है। कैसे यह समझें कि आलोचना करने वाले का मकसद क्या है? यदि आपके अपने आलोचना करते हैं तो यह आलोचना नहीं बल्कि करेक्शन है, सलाह है। जबकि जो लोग आपसे डायरेक्ट कनेक्ट नहीं है, आपको जानते नहीं हैं यदि वह आपकी आलोचना करते हैं तो उन आलोचनाओं का कोई भी मतलब नहीं होता। यह बहुत चतुराई से समझने की जरूरत है कि आलोचनाओं को एक शुद्धि यज्ञ की तरह अपने जीवन में इस्तेमाल करना है क्योंकि यह आप को बेहतर बनाने का प्रयास है।

टाइम मैनेजमेंट का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है क्योंकि सभी को जीवन में 24 घंटे मिले हैं। कितना समय, किस चीज के लिए दिया जाए इसका वर्गीकरण करना बहुत जरूरी है। इससे आपको समझ में आएगा कि आप किस समय को व्यर्थ कर रहे हैं और किसको आप बेहतर तरीके से उपयोग कर रहे हैं। हमें स्वास्थ हेतु योग व ध्यान और स्ट्रेस मैनेजमेंट द्वारा फिट रहने पर भी ध्यान देना होगा। जीवन जीने के लिए यह जरूरी है कि अपने जीवन में खुश रहें इसके लिए कुछ हॉबीज होना जरूरी हैं।

यहां कहने का अर्थ यह नहीं है कि हमें जीतने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, जीतना बहुत अच्छा है! लेकिन हार का स्वाद चखे बिना हम वास्तव में सफलता का आनंद नहीं उठा सकते। असफलताएं हमें एक व्यक्ति के रूप में विकसित होने और अगली चुनौती के लिए तैयार होने में मदद करती हैं। इसलिए हमें पता होना चाहिए कि अपनी असफलताओं को गरिमापूर्ण ढंग से कैसे गले लगाया जाए और अपनी हार में अर्थ खोजा जाए।

जितना अधिक आप कार्य को टालेंगे, उतना ही अधिक आप अपनी क्षमताओं पर संदेह करेंगे। जीवन में सफलता प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका है कभी हार न मानना।

इसलिए, अपने प्रदर्शन का मूल्यांकन करें, योजना बनाएं और कार्रवाई करें। पिछली हार से आपने जो सीखा है उसका उपयोग खुद को बेहतर बनाने के लिए करें। इस तरह, आप जीवन में आने वाली छोटी–छोटी असफलताओं से निराश नहीं होंगे।

हताशा को खुद पर हावी न होने दें, अपनी हार का विश्लेषण करें, अपनी असफलताओं से सीख लें क्योंकि जीतने के लिए हारना भी जरूरी है।

(लेखिका शिक्षाविद् एवं साइबर एक्सपर्ट तथा वर्तमान में निस्कॉर्ट मीडिया कॉलेज गाजियाबाद में प्राचार्या के पद पर कार्यरत हैं)

ISSN No. 2581-3528

बेटियों पर बढ़ता भरोसा, पितृसत्तात्मक सोच में आ रहा बदलाव

सोनम लववंशी

हमारे समाज में महिलाओं ने दशकों तक अन्याय और पूर्वाग्रह को झेला है। महिलाओं को चारदीवारी में भी लंबे समय तक कैद रखा गया। धीरे–धीरे इस परिस्थिति में बदलाव आना शुरू हुआ। जिसके बाद मातृशक्ति ने लैंगिक असमनताओं को तोड़ते हुए अपनी एक पहचान बना ली! आज वैश्विक परिदृश्य पर महिलाएं बेड़ियों को तोड़कर अपने सपनों और लक्ष्यों को साकार कर रही हैं। जिसमें हमारे देश की महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। सुखद पहलू यह है कि हमारे समाज की सोच और धारणा भी अब मातृ शक्ति के प्रति बदल रही है। आज महिलाओं को भरपूर अवसर उपलब्ध कराए जा रहें हैं। पहले स्त्री–पुरुष के बीच भेदभाव किया जाता था, महिलाओं को घर के कामों तक ही सीमित रखा जाता था, लेकिन अब जमीन से लेकर आसमां तक महिलाओं की पहुँच सुनिश्चित हो चुकी है। महिलाएं स्वयं अपनी किस्मत की लकीर खींच रही, तो पिता और पति भी अब मातृ शक्ति को पारिवारिक व्यवसाय में आगे बढ़ा रहे हैं, जो समाज में बदलाव का संकेत है।

दुनिया के सबसे अमीर शख्स बने बर्नार्ड अरनॉल्ट ने अपनी एक कंपनी 'क्रिश्चियन डिओर' की जिम्मेदारी अपनी बेटी डेल्फिन को सौंपी है, जो आधुनिक समाज और मातृ शक्ति के सशक्तिकरण की दिशा में एक मिसाल है। बेटियों पर उद्योगपतियों का बढ़ता भरोसा इस बात का भी द्योतक है कि अब मानवीय संवेदना और मूल्यों में भी परिवर्तन आ रहा है। पहले पितृसत्तात्मक समाज की सोच यही रहती थी कि कुल का दीपक एक लड़का ही हो सकता है। परिवार का व्यापार बढ़ाने का काम एक बेटा ही कर सकता है, लेकिन इस सोच में बदलाव वैश्विक स्तर पर देखने को मिल रहा है। जिसमें हमारा देश भी पीछे नहीं है। मुगल काल के पश्चात भले हमारे समाज में महिलाओं के हक में कटौती कर दी गई, लेकिन धीरे–धीरे संवैधानिक मूल्यों को तरजीह देते हुए महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। भारत में भी वर्तमान समय में कई बड़े उद्योगपति हैं, जिन्होंने अपने व्यवसाय की जिम्मेदारी बेटियों को सौंपी है। एक रिपोर्ट की मानें तो वर्तमान समय में देश में 24 फीसदी पारिवारिक व्यवसाय महिलाएं चला रही हैं, जिसमें से 76 प्रतिशत पिता और 24 फीसदी महिलाएं पति का व्यवसाय संभाल रही हैं। जो मातृ शक्ति के आत्मनिर्भर बनने और सशक्तिकरण की नई परिभाषा पेश करती है।

देश में ईशा अंबानी एक ऐसा नाम है। जो 2014 से रिलायंस जियो और रिलायंस रिटेल की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। यह जिम्मेदारी उनके पिता मुकेश अंबानी ने दी थी। नोएल टाटा की बेटी लेह भी वर्ष 2022 से ताज होटल समूह की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। इसके अलावा आदी गोदरेज की बेटी निसाबा गोदरेज वर्ष 2017 से गोदरेज समूह की कार्यकारी अध्यक्ष हैं। शिव नाडार की बेटी रोशनी ने 2020 में एचसीएल के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाल ली थी। ऐसे नामों की एक लंबी फेहरिस्त है, जिसमें विनिता गुप्ता, देशबंधु गुप्ता की बेटी भी शामिल हैं। विनिता गुप्ता 2013 से देश की तीसरी बड़ी दवाई कंपनी ल्युपिन के प्रमुख का दायित्व निभा रही हैं।

वही कुछ बेटियां ऐसी भी हैं, जिन्हें अपने पिता या पति के व्यवसाय में कोई रुचि नहीं दिखाई पड़ी तो उन्होंने स्वयं की लकीर खींचने का प्रयास किया। इसमें बोतलबंद पानी कंपनी 'बिसलेरी' के मालिक रमेश चौहान की बेटी जयंती और कुमार मंगलम की बेटी अनन्या शामिल हैं। बिसलेरी के मालिक रमेश चौहान की बेटी ने अपने पिता के व्यवसाय को आगे चलाने से इनकार कर दिया। जबकि कुमार मंगलम बिड़ला की बेटी अनन्या ने पिता का व्यवसाय चलाने के बजाय खुद की कंपनी माइक्रोफिन प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की। ये कुछ ऐसी मातृ शक्ति की कहानी है। जो आज हमारे समाज को आईना दिखाने का कार्य कर रही हैं। आज महिलाएं अपने बलबूते हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रहीं हैं। साथ ही पितृसत्तात्मक सोच में बदलाव भी देखने को मिल रहा है। लोकतांत्रिक सरकारें भी लगातार आधी आबादी को पूरे अधिकार उपलब्ध कराने का भरपूर प्रयास कर रही हैं। साथ ही हमारी रहनुमाई व्यवस्था ने महिला शक्ति को जन धन योजना से जोड़कर बड़ा आर्थिक समृद्धि का कदम उठाया। उसके बाद महिलाओं के लिए अनगिनत ऐसी योजनाएं क्रियान्वित की जिससे समाज में भ्रूण हत्या जैसे घिनौने कृत्य पर काबू पाया जा सके।

आज हमारे समाज में कन्या भ्रूण हत्या के मामलों में तेजी से गिरावट आई है जो इस तरफ इशारा करती है कि समाज ने अब बेटा–बेटी में भेदभाव को दरकिनार करना शुरू कर दिया है। बीते दिनों की ही बात है, जब लालू यादव की बेटी ने अपने पिता के लिए किडनी दान की थी। ऐसे में देखें तो महिलाओं को जब भी अवसर मिला है। उन्होंने हर रूप में अपने उत्तरदायित्वों का सफल निर्वहन किया है और यही वजह है कि महिलाएं–पुरुषों से आज किसी भी मामले में उन्नीस नहीं हैं! फिर चाहें वह बात व्यापार की हो या घर–परिवार और सरकार चलाने की।

(लेखिका स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी हैं)

ISSN No. 2581-3528

मीडिया सुर्खियां (01 फरवरी, 2023 – 28 फरवरी, 2023)

01 फरवरी : अडानी ग्रुप ने अपना FPO किया रद्द, निवेशकों के पैसे किए जाएंगे वापस।

02 फरवरी : RSS के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले जी ने कहा कि भारत में रहने वाले सभी हिन्दू हैं, क्योंकि उनके पूर्वज हिंदू थे। उनकी पूजन पद्धति अलग हो सकती है, लेकिन उन सभी का DNA एक है। वह जयपुर में बिड़ला ऑडिटोरियम के दीनदयाल स्मृति व्याख्यान दे रहे थे।

03 फरवरी : जम्मू–कश्मीर के कुलगाम में जैश–ए–मोहम्मद मॉड्यूल का भंडाफोड़, छह गिरफ्तार।

04 फरवरी : ED ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के करीबी अलंकार संवई से लगातार 3 दिन पूछताछ की। यह पूछताछ TMC के साकेत गोखले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस के तहत की गई।

05 फरवरी : अमेरिका में दिख रहे चीन के जासूसी गुब्बारे को मार गिराया गया है।

06 फरवरी : रामचरित मानस विवाद पर यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि रामचरित मानस पर टिप्पणी करने वाले अज्ञानी हैं उन्हें रामचरित मानस की जानकारी नहीं है।

07 फरवरी : प्रतापगढ़ के BJP सांसद संगम लाल गुप्ता ने लखनऊ का नाम भगवान लक्ष्मण के नाम पर रखने की उठाई मांग।

08 फरवरी : कोलकाताः कारोबारी मनजीत सिंह जिज्ञा के घर छापा, भारी मात्रा में नकदी बरामद।

09 फरवरी : PM मोदी की यूनिवर्सिटी डिग्री का मामला, गुजरात हाईकोर्ट ने सुरक्षित रखा फैसला।

10 फरवरी : लखनऊ में ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट का आगाज। पीएम नरेन्द्र मोदी के साथ–साथ उद्योग जगत के बड़े दिग्गजों ने लिया हिस्सा। रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने कहा कि जिस तरह से वैश्विक जगत के लिए भारत आशा का केंद्र है, वैसे ही यूपी, भारत के लिए आशा का केंद्र है।

11 फरवरी : ISRO ने आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान के दूसरे संस्करण का सफल प्रक्षेपण किया है। इसरो ने एक बयान जारी करते हुए कहा है कि एलवी डी2 ने तीनों उपग्रहों को उनकी लक्षित कक्षा में स्थापित किया है।

12 फरवरी : तुर्की में भूकंप से तबाही, मरने वालों की संख्या 24,617 और सीरिया में 3500 से ज्यादा की मौत।

13 फरवरी : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया बेंगलुरु में एयरो इण्डिया–2023 का उद्घाटन।

14 फरवरी : दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने मांग की है कि दिल्ली जल बोर्ड घोटाले में तीन व्यक्तियों की गिरफ्तारी पर्याप्त नहीं है। इस घोटाले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज की जाए क्योंकि जल बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में उन्हें इस घोटाले की पूरी जानकारी थी।

15 फरवरी : निक्की हत्याकांड : आरोपी साहिल को पांच दिन की कस्टडी में भेजा गया।

16 फरवरी : भारतीय मूल के नील मोहन बने Youtube के नए CEO।

17 फरवरी : दिल्ली वक्फ बोर्ड के पास नहीं रहेंगी 123 डिनोटिफाइड प्रॉपर्टी, शहरी विकास मंत्रालय ने भेजा आदेश

18 फरवरी : उद्धव ठाकरे गुट को बड़ा झटका। चुनाव आयोग ने शिंदे गुट को शिवसेना का नाम और पार्टी सिंबल इस्तेमाल करने की इजाजत दी।

19 फरवरी : चीन में राष्ट्रपति शी जिनपिंग के खिलाफ प्रदर्शन करने वाले हो रहे गायब। एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि शी जिनपिंग की सरकार उन लोगों को एक–एक कर गायब कर रही है।

20 फरवरी : बिहारः उपेंद्र कुशवाहा ने किया नीतीश कुमार की पार्टी JDU से अलग होने का ऐलान, नई पार्टी का नाम होगा राष्ट्रीय लोक जनता दल।

21 फरवरी : PM नरेन्द्र मोदी ने कहा– भारत डिजिटल भुगतान क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में।

♦ ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के जरिए योगी सरकार की देखरेख में 33.52 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए। 19058 एमओयू के जरिए रोजगार के 93,82,607 अवसर भी यूपी के युवाओं के लिए सृजित होंगे। इनमें से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 64 प्रस्ताव प्राप्त हुए। इनमें 2,57,922 करोड़ के निवेश होंगे, जिसके जरिए 7.82 लाख से अधिक युवा रोजगार प्राप्त करने में सक्षम होकर उत्तम प्रदेश के विकास में भागीदार होंगे।

22 फरवरी : कर्नाटक में टीपू सुल्तान के समर्थकों ने 2010 में अनाधिकृत रूप से उनके नाम पर एक सर्कल का नाम रखा था। हिंदुत्ववादी संगठन शिवाजी महाराज संगठन ने इसका नाम वीर सावरकर के नाम पर रखने की मांग की है। नगर नगरपालिका परिषद ने कहा है कि टीपू सुल्तान सर्किल अनौपचारिक है इसलिए इसका नाम बदला जाना चाहिए।

23 फरवरी : अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने मास्टरकार्ड के पूर्व सीईओ अजय बंगा को वर्ल्ड बैंक का प्रमुख बनाया है।

25 फरवरी : योगी आदित्यनाथ ने सदन में कहा, रामचरितमानस को जलाकर सपा ने किया 100 करोड़ हिंदुओं का अपमान।

26 फरवरी : दिल्ली एक्साइज पॉलिसी में लंबी पूछताछ के बाद सीबीआई ने दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार कर लिया है।

27 फरवरी : प्रयागराज में राजू पाल हत्याकांड के गवाह उमेश पाल की हत्या मामले में खुलासा। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के मुस्लिम हॉस्टल से एक आरोपी की गिरफ्तारी।

28 फरवरी : प्रयागराज में हुए उमेश पाल हत्याकांड के मुख्य साजिशकर्ता सदाकत खान की एक तस्वीर समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव के साथ सामने आई।

संयोजन : प्रतीक खरे

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते
लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी,
उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी,
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी,
पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति
श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

- Rich Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Huge Hall
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

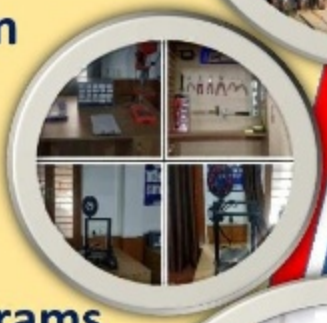

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317,09910665195